23

ज्ञानामृत

मासिक

वर्ष 39, अंक 08, फरवरी 2004

भोपाल- करुणा और सहयोग महोत्सव का उद्घाटन करते हुए (बाएं से) राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. भ्राता निर्वैर जी, मेयर बहन विभा पटेल तथा प्योरिटी पत्रिका के सम्पादक ब्र.कु. भ्राता बृजमोहन जी । (नीचे) 60 हज़ार से अधिक भाई-बहनें शिव पिता की झण्डियाँ लहराते हुए उत्साहपूर्वक कार्यक्रम का लाभ लेते हुए।

1. शान्तिवन- शान्तिवन परिसर में श्रमिक वर्ग को कम्बल बाँटती हुईं राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी। साथ में हैं ब्र.कु. मुन्नी बहन तथा राजयोगिनी दादी शान्तामणि जी। **2. भुवनेश्वर-** उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता एम.एम. राजेन्द्रन को ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु.लीना बहन। **3. ढ़ाका (बंगला देश)-** ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल जी को उनके आध्यात्मिक प्रवचन के बाद बंगला देश के राष्ट्रीय मधुमेह संस्थान की तरफ से मोमेन्टो भेंट किया जा रहा है। **4. कुरनूल-** आ.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता चन्द्रबाबू नायडू को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. रानी बहन। **5. अनन्तपुर-** आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हैदराबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता वी. ईश्वरय्या जी, न्यायाधीश भ्राता चन्द्रकुमार जी, भ्राता बी.सी. ओबुलेसप्पा, ब्र.कु. विजय बहन तथा ब्र.कु. लता बहन। **6. सेन्ट पीटर्सवर्ग-** आन्तरिक सद्भावना–सम्बन्धों का संगीत कार्यक्रम में (बाएं से दाएं) ब्र.कु. सुधा बहन, ब्र.कु. सन्तोष बहन, फ़ादर रोमन, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी तथा ब्र.कु. चक्रधारी बहन। **7. गांधीनगर-** राजयोग द्वारा आन्तरिक शक्तियों का विकास कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गुजरात के मंत्री भ्राता अशोक भाई भट्ट, ब्र.कु. ऊषा बहन, ब्र.कु. कैलाश बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से –

शिव हैं भण्डारे भरपूर करने वाले

आज मनुष्य के भण्डारे खाली हैं और मनुष्य को कभी निर्धनता के, कभी सम्बन्धियों के कटु व्यवहार के तथा कभी सरकार द्वारा टैक्स (Tax, कर) के काँटे भी लगते रहते हैं। काल के पंजे में तो सभी हैं ही। अत: आज की परिस्थिति में तो खास तौर पर परमात्मा शिव को अवश्य जानना चाहिए क्योंकि उनके बारे में तो यह कहावत है कि - **'शिव के भण्डारे भरपूर हैं और काल-कण्टक सब दूर हैं।'**

क्या आपके सुख-शान्ति के भण्डारे भरपूर हैं?

आज एक विचित्र बात यह है कि भारत के बहुत-से लोग तो यह समझे बैठे हैं कि वे शिव को भली-भाँति जानते हैं, शिव की नित्य पूजा करते हैं और बड़े उत्साह से शिवरात्रि भी मनाते हैं परन्तु प्रश्न उठता है कि लोगों ने शिव को जैसा जाना हुआ है और जिस तरह वे शिवरात्रि मनाते हैं, उससे क्या उनके सुख-शान्ति के भण्डारे भरपूर होते जा रहे हैं? और क्या काल कण्टक दूर होते जा रहे हैं? यदि नहीं तो प्रमाणित है कि उस जानकारी में कुछ कमी है। उदाहरणार्थ, आप जानते हैं कि लोग शिव पर प्राय: अक, धतूरा इत्यादि चढ़ाते हैं। अब विचार की बात है कि यदि इसी अक, धतूरे से शिव प्रसन्न होते तब तो अधिक यत्न की आवश्यकता ही न रहती बल्कि एक-दो रुपये का सौदा लेकर उन पर चढ़ाने की थोड़ी-सी मेहनत से जीवन के लक्ष्य की सिद्धि हो जाती। इतना पुरुषार्थ तो कोई भी कर सकता है। यदि इतने भर से ही शिव, जिन्हें 'पाप-कटेश्वर' और 'मुक्तेश्वर' कहा गया है, पाप काट देते और मुक्ति प्रदान कर देते तब तो योग-तपस्या और ज्ञान-ध्यान को कोई भी न पूछता। विवेक से यह बात सिद्ध है कि वह अक, धतूरा इत्यादि कुछ और ही चीजें हैं जिन्हें यदि एक बार सचमुच शिव पर चढ़ा दिया जाय तो आशुतोष अवढरदानी शिव प्रसन्न होकर मुक्ति और जीवनमुक्ति के वर दे देते हैं।

अमृत-सूची

❑ सहज योग की सहज विधि (सम्पादकीय) 4
❑ खुद चैतन्य शिव यहाँ (कविता) 5
❑ तोड़ दे बंधन 6
❑ कर्मों के फल से न बचोगे (कविता) 7
❑ 'पत्र' सम्पादक के नाम 8
❑ सच्चा साथी 9
❑ महाशिवरात्रि पर्व महान (कविता) 10
❑ अंधकार को चीरती एक किरण 11
❑ अपकारी पर उपकार 12
❑ माया के अनेक रूप 14
❑ नशे का नाश 15
❑ प्रभु का साथ और दुआओं का हाथ 18
❑ पिताश्री की अप्रतिम एकाग्रता .. 21
❑ ओमशान्ति हेल्प लाइन 23
❑ वैज्ञानिक शोध – आत्मा,
❑ पुनर्जन्म और मृत्यु 24
❑ पवित्र धन एवं समय की शक्ति 27
❑ सचित्र सेवा समाचार 29

★★★

शिव और शंकर में अन्तर

प्राय: लोग 'शिव' और 'शंकर' को पर्यायवाची समझते हैं। वास्तव में शिव और शंकर एक ही के दो नाम नहीं हैं। आप देखते हैं कि मन्दिरों में एक तो अंगुष्ठ-जैसी, शरीर के आकार से रहित मूर्ति रखी रहती है जिसे शिवलिंग कहते हैं और दूसरी शारीरिक रूप वाली महादेव शंकर की होती है। कभी आपने सोचा कि ये दोनों अलग-अलग मूर्तियाँ क्यों हैं? इसका यही कारण है कि शिवलिंग तो निराकार (शरीर-रहित) ज्योतिस्वरूप, ब्रह्मलोक के निवासी ज्योतिर्लिंगम् अथवा ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव की प्रतिमा है और दूसरी सूक्ष्म शरीर वाले, शंकरपुरी के निवासी एक देवता की मूर्ति है। 'शिव' ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तीनों देवों के रचयिता अर्थात् त्रिमूर्ति अथवा 'देवों के देव' हैं। 'शिव' ही को 'मुक्तेश्वर' और 'पापकटेश्वर' भी कहा जाता है। शिवरात्रि सर्वमहान् आत्मा भगवान शिव के दिव्य जन्म का उत्सव है।

भगवान के बारे में कहा गया है कि 'वे अजन्मा हैं' परन्तु साथ ही यह भी कहा गया है कि वे जन्म लेते भी हैं। ये दोनों बातें परस्पर विरोधी मालूम होती हैं। परन्तु वास्तव में ये दोनों रहस्य हैं शत-प्रतिशत सत्य। परमात्मा शिव को 'अजन्मा' इसलिए माना गया है कि वे माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, कारण कि माता के गर्भ से जन्म उस ही का होता है जिसका कोई कर्म-बन्धन अथवा कर्मों का लेखा हो किन्तु परमात्मा शिव तो पूर्ण रूप से कर्मातीत हैं। अब सवाल यह है कि यदि परमात्मा गर्भ से जन्म नहीं लेते तो भला कैसे लेते हैं? देखा जाये तो इसी प्रश्न का उत्तर आश्चर्यजनक है।

भगवान शिव का जन्म एक अनोखा जन्म है। वह शिव-लोक से आकर एक वृद्ध मनुष्य के तन में सवारी करते हैं अर्थात् उसके तन में दिव्य प्रवेश करते हैं क्योंकि उन्हें लालन-पालन नहीं लेना होता और शिक्षा-दीक्षा नहीं लेनी होती बल्कि मनुष्यों के कल्याणार्थ ज्ञान सुनाने के लिए केवल मुखेन्द्रि की आवश्यकता होती है। **जिस मनुष्य के तन में परमात्मा प्रवेश करते हैं उस मनुष्य का जन्म तो अपने माता-पिता से हुआ होता है और वह अपने कर्मों तथा पुरुषार्थ-अनुसार अपना पालन भी करता है परन्तु परमात्मा का 'जन्म' तो केवल उस मनुष्य में अपने-आप प्रवेश होने का ही नाम है। अत: भगवान अथवा शिव को 'स्वयंभू' अर्थात् 'अपना जन्म आप लेने वाला' कहा गया है।**

परमपिता परमात्मा के इस प्रकार के असाधारण एवं अलौकिक जन्म की पुण्य स्मृति में ही आज तक भारत में 'शिव-रात्रि' का उत्सव मनाया जाता है और उन्हें 'सदाशिव' कहा जाता है क्योंकि पूर्वकल्प में जब सारी सृष्टि माया-रात्रि में अज्ञान-निद्रा में सोई पड़ी थी और दु:ख एवं अशान्ति से पीड़ित थी तब सदा जागती-ज्योति और कल्याण-युक्त परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य जन्म लेकर सभी मनुष्यात्माओं को गीता-ज्ञान सुनाया था और उन्हें पूर्ण पवित्रता, सुख एवं शान्ति का वर्सा दिया था और इस प्रकार उनका कल्याण किया था। उन्होंने कलियुगी तमोगुणी मनुष्य-सृष्टि को सतयुगी, सतोप्रधान दैवी सृष्टि में परिवर्तित किया और अधर्म का विनाश कराके मनुष्यात्माओं को मुक्ति एवं जीवनमुक्ति के वरदान दिये थे। इसी कारण आज तक भारतवासी परमात्मा शिव की पूजा भी करते हैं।

अत: याद रहे कि परमात्मा का 'जन्म' तो 'परकाया प्रवेश' ही का दूसरा नाम है और यही कारण है कि त्रिलोकीनाथ, सर्वशक्तिमान, ज्ञान के सागर परमात्मा के अवतरित होने पर जनसाधारण उन्हें पहचान ही नहीं पाते

क्योंकि भगवान जिस शरीर में अवतरित होते हैं, वह शरीर तो अन्य आत्मा का होता है और उसके कर्मों के अनुसार साधारण होता है और जन-साधारण चर्म-चक्षुओं से उस साधारण व्यक्ति को देख कर छले-से जाते हैं। यदि भगवान कोई 'अपना शरीर' लेते तो वह इतना तेजोमय, इतना सुन्दर, आकर्षणकारी, इतना दिव्य होता कि कोई भी व्यक्ति उन्हें पहचानने से न चूकता परन्तु कर्मातीत होने के कारण परमात्मा शरीर तो ले ही नहीं सकते क्योंकि उन्हें प्रारब्ध तो भोगनी ही नहीं होती।

शिव ने क्या किया?

प्रश्न उठ सकता है कि परमात्म शिव को क्यों याद करें? उन्होंने ऐसा क्या महान कार्य किया है कि आज तक उनकी महिमा, उनका गायन और पूजन होता है और उनका जन्मोत्सव मनाया जाता है? हम बता चुके हैं कि मनुष्यात्माओं का कल्याण करने के कारण परमात्मा के 'शिव' नाम का गायन हुआ। आप पूछेंगे कि क्या कल्याण किया? **आज मनुष्य समझते हैं कि किसी को अन्न, धन, वस्त्र इत्यादि देना अथवा थोड़े समय के लिए किसी को आय का साधन इत्यादि प्राप्त करा देना ही कल्याण करना है। भारत सरकार ने तथा सामान्य जनता ने इस प्रकार के कई केन्द्र 'कल्याण केन्द्रों' के नाम से खोले हुए हैं। परन्तु आप सोचिये कि जब तक मनुष्यात्माओं में जागृति नहीं आयेगी, जब तक उनके कर्मों में पवित्रता नहीं आयेगी तब तक उनके दु:खों का कोई न कोई कारण तो बना ही रहेगा। अत: परमपिता परमात्मा, जो कि कर्मों की गुह्यगति को जानने वाले हैं, मनुष्य का कल्याण इस प्रकार करते हैं कि वह ईश्वरीय विद्या द्वारा उनके कर्मों में श्रेष्ठता लाते हैं।**

दो चीजों की आवश्यकता है

कर्मों को श्रेष्ठ बनाने के लिए दो चीज़ों की आवश्यकता है - एक तो ज्ञान की और दूसरे योग की। कौन-से कर्म करने चाहिएँ, कौन-से नहीं चाहिएँ, आत्मा क्या है, उसे अपने स्वरूप में कैसे स्थित होना चाहिए इत्यादि-इत्यादि विषयों को ठीक-ठीक जानना ही 'ज्ञान' कहलाता है। केवल ज्ञान से ही मनुष्य पवित्र नहीं बन सकता क्योंकि जब तक मनुष्य सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा शिव से शक्ति न ले तब तक वह अपने पूर्वकालीन संस्कारों को बदल नहीं सकता, पूर्वकाल में किये विकर्मों को दग्ध नहीं कर सकता और पूर्ण कल्याण अथवा आनन्द को प्राप्त नहीं कर सकता। परमपिता परमात्मा से आध्यात्मिक शक्ति, संस्कारों की पवित्रता, आनन्द इत्यादि की प्राप्ति के लिए उनसे सम्बन्ध स्थापित करना ही 'योग' है।

दो वरदान

परमात्मा शिव ने स्वयं ही वास्तविक योग सिखा कर मनुष्य को ''माया जीते जगजीत'' बनाया। योग द्वारा ही उन्होंने मनुष्यों के पाप-बन्धन काटे और योग द्वारा ही पावन किया। इस कारण ही वह 'पापकटेश्वर' अथवा 'पतित-पावन' कहलाते हैं। ज्ञान-रूपी सोमरस पिलाने के कारण ही उनको 'सोमनाथ' भी कहते हैं। ये दोनों वरदान परमात्मा शिव ही देते हैं।

अक और धतूरा चढ़ाने का अर्थ

इन रहस्यों को जानने पर ही शिवरात्रि को वास्तविक रीति में मनाया जा सकता है और मुक्ति तथा जीवनमुक्ति प्राप्त की जा सकती है। तब ही मनुष्य समझ सकता है कि हमें शिव पर अक और धतूरा नहीं चढ़ाना बल्कि ये पदार्थ तो हमारे विषयों अथवा विकारों के प्रतीक हैं और हमें उन विकारों ही को शिव पर चढ़ाना है, तभी हमारी मुक्ति होगी। हमें शिवरात्रि की एक रात को खाना-पीना बन्द करके ही व्रत नहीं रखना। **शिवरात्रि तो कलियुग के अन्त और**

शेष पृष्ठ.....10 पर

सहज योग की सहज विधि

भारत में वेदों की बहुत महिमा है। 'वेद' शब्द संस्कृत की 'विद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना। जानने वाले को विद्वान कहा जाता है। जिन्होंने वेद पढ़े हैं वे जानते हैं कि वेदों में एक निराकार, ज्योतिस्वरूप परमात्मा की महिमा की गई है। इसके साथ-साथ सर्व शक्तिवान की शक्तियाँ, विभूतियाँ, दिव्य कृतियाँ, मनोकामना पूर्ति की विधियाँ क्या-क्या हैं – उनका भी विशद वर्णन किया गया है। इस अर्थ में हम कह सकते हैं कि परमात्मा पिता की यथार्थ महिमा को जानने वाला और स्वयं उस महिमा में ढलने वाला ही वेदज्ञ है।

चराचर जगत में जानने योग्य केवल एक ही सत्ता है, वह है परमात्मा। कोई कह सकता है कि ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि परमात्मा पिता चराचर जगत के चैतन्य बीज हैं। जिस प्रकार झाड़ के तने, डाली, पत्तों, शाखाओं को पुरज़ोर जान लेने के बाद भी, बिना बीज को जाने उसे आप उगा नहीं सकते, इसी प्रकार, जगत रचयिता, बीज रूप परमात्मा को जाने बिना आप उसकी रचना के सही और शाश्वत रहस्यों को समझ नहीं सकते। एक परमात्मा को जानने के बाद, उनके द्वारा सभी कुछ जाना जा सकता है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का पहला पाठ ही है अल्फ अर्थात् अल्लाह (परमात्मा) को जानना। यहाँ ज्ञान प्रापत्यार्थ आने वाले हर बहन-भाई को सर्वप्रथम सृष्टि के चेतन बीज-स्वरूप परमात्मा पिता की पहचान देकर उनसे बुद्धियोग लगाने की विधि सिखाई जाती है। जो यह विधि सीख जाते हैं वे ही राजयोगी कहलाते हैं। अत: राजयोग, परमात्मा पिता को यथार्थ जानकर, हर श्वास, संकल्प में उनकी महिमा करने का ही नाम है। चूँकि वेदों का सार परमात्मा की महिमा है अत: राजयोगी सच्चा वेद-स्वरूप भी है।

परमात्मा की महिमा को अपरंपार कहा गया है। केवल इतना भर सुन लेने से कई भक्त और जिज्ञासु समझ नहीं पाते कि कैसे महिमा करें। जैसे, विद्यालय में विद्यार्थी को सवाल हल करने की विधि खोलकर बतानी पड़ती है, इसी प्रकार, अपरंपार का अर्थ भी सरल शब्दों में चाहिए। अपरंपार का अर्थ है कि जिसका पार न पाया जा सके। परन्तु पार नहीं पाएँगे तो स्मृति कैसे टिकेगी, महिमा का ज्ञान होने पर ही तो मन उसमें मगन होकर मन्मनाभव हो पाएगा। अत: राजयोग का एक नाम सहज योग भी है क्योंकि इसमें अपरंपार महिमा को अति सरल करके बताया गया है। योग-साधना के प्रथम कदम के रूप में राजयोगी अपने से प्रश्न पूछता है कि मैं कौन हूँ। इस प्रश्न के उत्तर में उसका आत्मिक रूप, प्रकाश के एक जाज्वल्यमान कण के सदृश प्रकट हो जाता है और उसे देह के मात्र आवरण होने की स्पष्ट अनुभूति होने लगती है। योगाभ्यास के दूसरे कदम के रूप में वह अपने से प्रश्न पूछता है कि मेरा कौन और इसके उत्तर में परमधाम में निरन्तर प्रकाशमान परमात्मा पिता उसके तीसरे नेत्र के समक्ष आ जाते हैं। योगाभ्यास वास्तव में इन दो ज्योतिर्मय कणों के मिलन का ही नाम है। यह मिलन प्रारम्भ होता है आत्मा के द्वारा ईश्वर महिमा के संकल्पों से, जैसे - **प्यारे बाबा, मेरा एकान्तिक प्रेम आपके साथ है, आप ही मुझे सर्वप्रिय लगते हो, मेरी सांसारिक इच्छाएँ समाप्त हो गई हैं और आपके रूप-गुण का मौन अलौकिक रस मुझे भा गया है। मीठे शिव बाबा, सांसारिक स्मृतियों ने आँधी की धूल की तरह मन-आँचल को जन्म-जन्म मैला ही किया पर आपकी स्मृति तो सावन की स्वच्छ बरसात की तरह है, जो उस मैल को धो रही है। अब आप मेरे मन-सिंहासन पर विराजमान हैं और मैं आपके दिलतख्तनशीन हूँ। मेरा सब आपका हो गया है। आपका जो है उसे मैंने वर्से के रूप में पा लिया**

है। आप मेरी सर्व आशाओं की पूर्ति हो और आध्यात्मिक प्यास की तृप्ति हो। मुझे इच्छा पूर्ति के लिए जो चाहिए उससे पदमगुणा आपसे मिला है इसलिए मैं सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता की लहरों में लहरा रहा हूँ .....।

बिना सत्य ईश्वरीय ज्ञान के प्रभु की जो महिमा की गई वह ओढ़ी हुई, नकल की हुई थी क्योंकि वह महिमा किसी साधु-सन्त, महन्त, भक्त आदि के हृदय का स्पन्दन था। परन्तु प्यार वो सच्चा होता है जो अपने हृदय से मुखर हो। ईश-महिमा को दिल के प्यार के सुर में पिरोकर, भावना भरी मौलिकता के साथ उनके अर्पण करना ही सहजयोग है।

योगामृत का पिपासु यह पक्का कर ले कि जानने योग्य, महिमा योग्य, स्मरण योग्य, वर्णन योग्य, देखने और दिखाने योग्य वही एक भोलानाथ शिव है, वही साध्य है। जैसे शिव मन्दिर में बूँदों का ताँता पिण्डी की ओर लगा रहता है, ऐसे ही संकल्पों का काफिला प्रभु को अपनी मंजिल मानकर उस ओर बढ़ता चले। जैसे मीरा को देख स्वत: श्री कृष्ण की याद आ जाती है ऐसे ही योगी को देख योगेश्वर की याद स्वत: आए। देखने वालों को लगे कि यह तो खोया हुआ है, समाया हुआ है उसके प्यार में। जब ऐसा होगा तब योगी की इन्द्रियों से ईश्वरीय शक्तियाँ झरने लगेंगी। भीतर की सर्व कटुता और अशान्ति जलकर नष्ट होने लगेगी। आत्मा कुन्दन की तरह लचीली परन्तु परिस्थितियों को पार करने में अडोल बन जाएगी। ईश्वरीय किरणें उसके चारों ओर ऐसा सुरक्षा कवच निर्मित कर देंगी जो हर घड़ी, हर वातावरण में अभेद्य रहेगा। परमधाम से आती अदृश्य किरणें निरन्तर उसके मस्तक को प्रकाशित करती रहेंगी। भारत सरकार ने उग्रवाद के नियन्त्रण के लिए सीमा पर करंट वाली तार लगाने में समय, शक्ति, धन सब लगाया पर फिर भी वह अभेद्य कहाँ ? परन्तु ईश्वरीय याद रूपी बाड़ में प्रकृति की हलचल, स्वभाव की खिट-पिट, शरीर की बीमारी, वातावरण की नकारात्मक वृत्ति कोई भी सेंध नहीं लगा सकेगी। प्रभु की याद ढाल बनकर हर विकार से बचाती रहेगी।

★★★

खुद चैतन्य शिव यहाँ

ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

चढ़ा रहे हो तुम जल शिवलिंग पर वहाँ,
खुद चैतन्य शिव यहाँ अमृत पिलाने आए हुए हैं।
कर रहे हो भेंट बेल-पत्तर-अक, पत्थर पे वहाँ,
वो खुद यहाँ तेरी सारी कड़वाहट पीने आए हुए हैं।
बजा रहे हो तुम घण्टनाद मन्दिरों में वहाँ,
खुद चैतन्य शिव यहाँ हर घर मन्दिर बनाने आए हुए हैं।
घोट-घोट भाँग-धतूरा, पीने वाले सुन जरा,
वो खुद आत्म-चिंतन घोटना सिखाने आए हुए हैं।
सारी-सारी रात कीर्तन करने वाले,
खुद चैतन्य शिव यहाँ तुम्हें कीर्ति योग्य बनाने आए हुए हैं।
उठ जाग निकल ''शव रात'' से ''शिव रात्रि'' पर,
शिव बाप खुद आप तेरी ''रात'' मिटाने आए हुए हैं।
लम्बे-लम्बे तिलक लगा के नमः-नमः करने वाले,
वो तुझे गले लगा के पूज्य बनाने आए हुए हैं।
आओ! आओ! अज्ञान अन्धकार मिटाओ, चूक न जाना,
ज्ञान सूर्य स्वयं धरा पर आए हुए हैं।
खोज रहा जन-जन, कण-कण में,
वो चैतन्य शिव होके प्रत्यक्ष, समक्ष गीता ज्ञान सुनाने आए हुए हैं।
बजाओ नगाड़े, लगाओ नारे, बाल-युवा-वृद्ध सारे,
सुनो! खुद चैतन्य शिव फिर से पावन बनाने आए हुए हैं। ❑

तोड़ दे बंधन

ब्रह्माकुमारी राजेन्द्र, रतिया

इस सृष्टि पर पैदा हुआ प्रत्येक प्राणी स्वतन्त्रता से जीना चाहता है। विचारों की स्वतन्त्रता तो जीवन जीने के लिए, विकास के लिए अति महत्त्वपूर्ण है। स्वतन्त्रता सर्व प्राणियों का मूल स्वभाव है। सृष्टि के आदि काल सतयुग, त्रेतायुग में हम दैवी गुण वाले मनुष्यों के रूप में जीवनमुक्त, बन्धनमुक्त थे।

बन्धन किसी को भी पसन्द नहीं। मानव तो क्या पशु भी इसका विरोध करते हैं। जब किसी बन्धनमुक्त पशु को बाँधा जाता है तो वह पूरी ताकत से मुकाबला करके छूटना चाहता है। वह उछलता है, कूदता है और दहाड़ता हुआ भागने की कोशिश करता है। कोई पक्षी जब शिकारी के जाल में फँस जाता है तो मुक्त होकर गगन में उड़ने के लिए छटपटाता है। पिंजरे में कैद होकर सदा उदास रहता है। दाना-पानी छोड़ देता है और चुप्पी साध लेता है।

बन्धन दो प्रकार के होते हैं। एक हैं बाहरी, जो सभी को दिखाई देते हैं परन्तु दूसरे हैं आन्तरिक सूक्ष्म बन्धन, जो अदृश्य होते हैं और जिनका अनुभव हम स्वयं ही कर सकते हैं। बन्धनों की जकड़न अनुचित कार्य की ओर ले जाती है और उसका बुरा प्रभाव दूसरों पर भी पड़ता है। बाहरी बन्धनों से तो हम दूसरों के दया के पात्र बन कर छूट भी सकते हैं परन्तु आन्तरिक बन्धन इतने मजबूत और महीन होते हैं कि उनसे छुटकारा पाने के लिए भगवान के सिवाय कोई सहारा नज़र ही नहीं आता है। तभी तो कहते हैं - '' हे प्रभु, मेरे विषय-विकार मिटाओ, मुझ निर्बल को इतना बल दो कि मैं बुराइयों के बन्धन को तोड़ सकूँ।'' सूक्ष्म बन्धनों का सम्बन्ध हमारे मन, बुद्धि और संस्कारों से है। मानसिक विकार जैसे कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि तो मोटे रस्से की तरह हैं और कामनाएँ, वासनाएँ, तृष्णाएँ, इच्छाएँ महत्त्वाकाक्षाएँ आदि इनके महीन धागों की तरह हैं। इनमें बँधा मनुष्य बुद्धि का सन्तुलन खो देता है।

इन बन्धनों का बाहरी रूप बहुत लुभावना होता है और क्षणभंगुर सुख भी दे सकता है परन्तु अन्तिम परिणाम पश्चाताप की आग में धकेल सकता है। बन्धनों की शृंखला में मोह विकार का बन्धन देखने में बड़ा मीठा बन्धन है जो तृष्णाओं को जन्म देता है। महाभारत आख्यान में स्पष्ट बताया गया है कि किस प्रकार धृतराष्ट्र की दुर्योधन को युवराज बनाने की महत्त्वाकांक्षा सारे कुल के विनाश का कारण बनी और रामायण आख्यान की पात्र कैकेई की, भरत के लिए पाली गई महत्त्वाकांक्षा भी कइयों के कष्ट का कारण बनी। मोह जाल में फँसी माँ अपने पुत्र को ऊँची विद्या प्राप्त करने के लिए बाहर जाने से रोक देती है। कन्याएँ भी मोहवश होस्टल से वापिस आ जाती हैं क्योंकि मम्मी के बिना बेचैन हो जाती हैं। कई वानप्रस्थी भी संतों के डेरे में कुछ मास रहते हैं पर फिर नाती-पातों का मोह उन्हें घर में कैद कर देता है। यह सब सूक्ष्म मोहबन्धन का करिश्मा है जो कितने ही चैतन्य चिरागों की लौ को बुझा देता है। मनुष्य को आगे नहीं बढ़ने देता है। वापस उसी स्थान पर ऐसे ला खड़ा कर देता है जैसे कि रस्सी से बँधा पक्षी सीमित दायरे तक उड़कर वापस वहीं आ जाता है। सम्बन्धी का मोह कितना दु:खी करता है उसका अनुमान एक विधवा के आँसुओं से लगा सकते हैं।

बन्धन तो कोई भी भला नहीं है परन्तु मोह का बन्धन बुद्धि को शून्य कर देता है। मोह की पट्टी जब आँखों पर बन्ध जाती है तो मनुष्य विवेकहीन हो जाता है। मोह मनुष्य से अनुचित कार्य करवा देता है जिससे समाज में अन्याय, पक्षपात, भेदभाव, भ्रष्टाचार, नफरत जैसी बुराइयाँ फैलती हैं। श्रीमद्भगवद् गीता की सम्पूर्ण शिक्षा का निचोड़ है मोहजीत बनना। मोहजीत ही जगतजीत बन सकता है। मोहजीत ही भगवान को प्रिय है।

सूक्ष्म बन्धनों का मूल कारण है देह और देह के पदार्थों का आकर्षण। देह अभिमानी मनुष्य का मन सदा व्यक्ति, वस्तु, वैभव, पदार्थ आदि की तरफ खिंचा-खिंचा रहता है और उनमें फँसा मनुष्य रूप, रस, गँध, श्रवण और स्पर्श का सुख लेना चाहता है। यही सुख उसके बन्धन का कारण बन जाता है जैसे कि फूलों का रस भँवरे को,श्रवण का रस मृग को, स्पर्श का उन्माद हाथी को सदा-सदा के लिए महावत के बन्धन में बाँध देता है।

कई बन्धन सुखदायी भी होते हैं।

पैदा होते ही मनुष्य पारिवारिक सम्बन्धों के बन्धनों में बन्ध जाता है परन्तु ये बन्धन श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण करते हैं। जैसे वर्षा की बूँदें सीपी में बन्धकर मूल्यवान मोती बन जाती हैं वैसे ही मनुष्य भी संयम, नियम, मर्यादाओं के बन्धन में बँधकर चरित्रवान बन जाता है। मर्यादाओं का बन्धन बुराइयों से बचने के लिए खेत की बाड़ की तरह काम करता है।

जिन सम्बन्धों में स्नेह, संयम, मर्यादाएँ हैं, वे सम्बन्ध जीवनमुक्ति का द्वार खोल देते हैं। नर को श्री नारायण, नारी को श्री लक्ष्मी जैसा पूज्य पद दिला देते हैं। तभी तो प्रभु के प्रेम-बन्धन को श्रेष्ठ बन्धन माना जाता है। इसके विपरीत जिन सम्बन्धों में दूसरों के लिए प्रेम नहीं, सम्मान नहीं, स्नेह नहीं वे सम्बन्ध तानाशाही या दादागिरी कहलाते हैं। ऐसे सम्बन्धों में सदा बगावत का भय समाया रहता है। ऐसे भाव दूसरों की भावनाओं को कुचलते हैं, अरमानों का खून करते हैं। ये क्रूर और मानसिक कष्ट देने वाले होते हैं।

आज के दौर में बाहरी बन्धनों से सब राष्ट्र मुक्त हैं परन्तु सूक्ष्म बन्धनों से सृष्टि के सब प्राणी बँधे पड़े हैं। इन भीतरी बन्धनों से मुक्त होने के लिए भीतरी बल चाहिए। आन्तरिक बन्धनों को काटने के लिए ज्ञान की कैंची, योग की अग्नि चाहिए। ज्ञान प्रकाश होने से ही हम व्यर्थ को छोड़ कर समर्थ, शुद्ध, सकारात्मक सोच अपना सकते हैं। राजयोग के प्रयोग से ही हमारे दूषित संस्कार पावन बनते हैं। पुरानी, बुरी आदतें ढीली पड़ती हैं। योग वह अग्नि है जिसमें कठोर से कठोर, पुराने से पुराने संस्कारों के सूक्ष्म बन्धन भी दग्ध हो जाते हैं। तो आइए, हम उन सभी बन्धनों को तोड़ दें जिन बन्धनों ने हमारे सुख-चैन को छीन लिया। सर्व प्रकार के बन्धनों से मुक्त होने के लिए ईश्वरीय महावाक्य हैं – ''मीठे बच्चे! ईश्वरीय मर्यादाओं के बन्धन में स्वयं को बाँध लो तो सब बन्धन स्वत: समाप्त हो जाएँगे।''

★★★

कर्मों के फल से न बचोगे

– ब्र.कु. नीलू, लोहरदगा, गुमला

कर्मों के फल से न बचोगे चलना बहुत संभाल के,
अभी समय है, अभी बदल लो तेवर अपनी चाल के।
कोठी, कार, तिजोरी भर लो, चोरी और मिलावट कर लो,
माँ–बहनों की इज्जत हर लो, जो जी चाहे सो सब कर लो,
आयेगी किस काम हथकड़ी, यम ने रखी संभाल के।
अभी समय है ......

एक काम बस तन चमकाना, तरह–तरह के वेश बनाना,
वैसे तो तू है बड़ा सयाना, पर ना स्वयं को ही पहचाना,
रोयेगा जब दर्शन होंगे, अपने ही कंकाल के।
अभी समय है ......

अभी एक क्षण दया न आयी, निर्बल को पीड़ा पहुँचाई,
पटरी ले कर नाप ऊँचाई, कितनी कर ली पाप कमाई,
तड़पेगा जब खौलाएगा, काल कड़ाही डाल के।
अभी समय है ......

कोई रहा कुकर्म ना बाकी, खाये झूठी कसम खुदा की,
डींग मारता यहाँ–वहाँ की, नस–नस में तेरी चालाकी,
कर्मों के फल भूल ना जाना, होते बड़े कमाल के।
अभी समय है ......

रहना नहीं बुद्धि के धोखे, ईश्वर के कानून अनोखे,
देख रहा सब बैठ झरोखे, सही तौल बाँटता चोखे,
देख दूर तक दृष्टि डाल, ढूँढ़ न सुख तत्काल के।
अभी समय है ......

अभी नहीं कुछ भी बिगड़ा है, चौराहे पे आज खड़ा है,
अभी भी जीवन शेष पड़ा है, अहंकार में क्यों अकड़ा है,
परमेश्वर की राह पकड़ ले, मन से कपट निकाल के।
अभी समय है ......

★

'पत्र' सम्पादक के नाम

'ज्ञानामृत' मासिक ज्ञान का भण्डार है। मैंने इसे पढ़ कर बहुत ज्ञान अर्जित किया है तथा कुछ धारणाएँ भी मेरे जीवन में आई हैं। मैं चाहता हूँ कि यह मासिक जन-जन तक जाए और ज्ञान की किरणें सब तक फैलाए। इसके पढ़ने से विकार निकल कर सद्गुण आ जाते हैं। दिसम्बर, 2003 की ज्ञानामृत में 'काम विकार - पतन का द्वार' लेख पढ़ा। पढ़कर लगा कि सभी विकारों में से यह विकार वास्तव में अधिक पतन में ले जाने वाला है। इस पर जीत पाने पर ही हम सच्चे अर्थ में पावन बन सकते हैं। गीता के तीसरे अध्याय में काम को महाशत्रु बताया गया है। मुरलियों में भी शिव बाबा ने इसे महाशत्रु बता कर इस पर जीत पाने की अनेक युक्तियाँ बताई हैं। बाबा कहते हैं - ''बच्चे, देही अभिमानी बनो तो देह अभिमान में नहीं आएँगे क्योंकि देह अभिमान में आने से ही यह विकार आता है। इसके आने से आत्मा पतित हो जाती है।

– ब्र.कु. सतीश सक्सेना, लक्ष्मी नगर, दिल्ली

गत 5 वर्षों से 'ज्ञानामृत' मासिक ने अभूतपूर्व प्रगति की है। इसमें प्रकाशित लेख वास्तव में ही जनमानस को झकझोर कर नई चेतना जागृत करने वाले सिद्ध होते हैं। प्रबुद्ध जनों के अनुभव और दिव्य ज्ञान के स्पष्टीकरण ज़ेहन में उतर कर आमूल-चूल परिवर्तन करने वाले होते हैं। यह मासिक यूँ ही ईश्वरीय ज्ञान के आलोक को विभिन्न आयामों में जन-जन तक पहुँचाती रहे - ऐसी शुभ कामनाएँ हैं। 'काल-चक्र और राज्यसत्ता का चक्र' लेख बेहद पसन्द आया। ऐसे-ऐसे विद्त जन नि:सन्देह पारितोषिक योग्य हैं। मेरा धन्यवाद स्वीकार हो।

– ब्र.कु. किशन दत्त अनुदर्शी, शान्तिवन

मैं ज्ञानामृत मासिक का नियमित वाचन करता हूँ। इस मासिक के एक से बढ़कर एक लेख दिल को छू जाते हैं एवं दिल की गहराइयों के अंधेरों में नई रोशनी की किरण जल उठती है। मुझे ज्ञानामृत का हरेक लेख पढ़ कर बेहद सुख का अनुभव होता है। साथ-साथ जीवन में आने वाले उतार-चढ़ावों को पार करने का सहज रास्ता मिल जाता है। कई बार कुछ अनुभवों में मुझे ऐसा अनुभव होता है कि उस समय इस लेख में मैं ही हूँ और आँखों के सामने वह चलचित्र दिखाई देने लगता है। अगर किसी बड़ी समस्या में फँस जाने के कारण आँखों से आँसू बहते हैं तो ज्ञानामृत पढ़ता हूँ और ऐसा लगता है कि वह रूमाल बन कर आँसुओं को पोंछने का काम कर रही है। लगता है ज्ञानामृत का मुझ आत्मा से जन्म-जन्मान्तर का रिश्ता है एवं इस रिश्ते को जुड़ाने वाले भगवान के बच्चों को एवं साथ-साथ सच्चा-सच्चा ज्ञानामृत पिलाने वाली इस अमृतमयी मासिक को बहुत-बहुत शुभ कामना एवं बधाई-बधाई।

– ब्र.कु. अशोक निकुंज, म.प्र.

ज्ञानामृत के नवम्बर, 2003 के अंक में सम्पादकीय 'सुनने की शक्ति' एवं लेख ' पवित्र धन - राज्य कारोबार एवं त्वरित निर्णय शक्ति' पढ़ा। पढ़ कर बहुत-बहुत खुशी हुई एवं साथ-साथ मन में उठे हुए कई प्रश्नों के उत्तर भी मिल गये। भ्राता रमेश जी ने अपने लेख में संगमयुग में परमात्मा को पहचानना और उनका बन कर उन पर बलिहार जाना एवं भाग्य विधाता परमात्मा के साथ विश्व कल्याण की सेवा में सहयोगी बनना, यह बहुत बड़ी बात बता दी है। निर्णय करने की भाषा समझ में आ गई और दिल की गहराइयों में उतर गई। वास्तव में जब भी भ्राता रमेश जी का लेख पढ़ता हूँ तो ऐसा लगता है कि अंधों को रास्ता मिल रहा है। दिल से दुआयें निकलती रहती हैं कि आप ऐसे ही बाबा के महावाक्यों को सरल तरीके से लिख कर विश्व के कोने-कोने में अनेक आत्माओं तक ज्ञानामृत मासिक के द्वारा अमृत की बूँदें पहुँचाएँ। मुझ आत्मा की आपको बधाई है।

– ब्र.कु. अशोक, राजुर (महा.)

सच्चा साथी

– ब्रह्माकुमारी विजय, बीकानेर

मानव की स्वाभाविक वृत्ति है कि वह साथी ढूँढ़ता है। जीवन रूपी यात्रा में उसके कई साथी बनते और बिगड़ते हैं। समर्थ और निस्वार्थ साथी का सहयोग-स्नेह ही लम्बे समय तक बना रह सकता है, सुखदाई भी होता है परन्तु यदि साथी हिम्मतहीन और स्वार्थी है तो जीवन नैया को डुबो भी सकता है। सच्चा साथी वही है जो ऊँचा उठाये, सन्मार्ग दिखाए, मन को हल्का करे और श्रेष्ठता की ओर ले जाए। इस सम्बन्ध में एक युवक रामदास की कहानी उल्लेखनीय है। वह ब्राह्मण का बेटा था परन्तु पिताजी के पूजा-पाठ आदि के कर्मों को देखते हुए भी सीख नहीं सका था। एक दिन अचानक पिता की मृत्यु हो गई और वह अकेला हो गया। माँ पहले ही परलोक सिधार चुकी थी। रामदास ने पिता के मुख से कई बार भगवान का नाम सुना था। दु:खी अवस्था में उसने सोचा कि उस भगवान से मिलूँगा जो सबका अपना है परन्तु भगवान को मिले कैसे ? पाये कहाँ पर ? यह उसे पता नहीं था। वह एक महात्मा के पास पहुँचा और प्रार्थना की कि मुझे भगवान के दर्शन करा दो, उससे मिला दो।

महात्मा जी ने कहा कि यह बहुत कठिन कार्य है, इसके लिए बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। रामदास ने परिश्रम करने की ठान ली। महात्मा जी के निर्देशन में, समीपस्थ कुटिया में बैठकर जाप करने लगा परन्तु कुछ समय के बाद मन उखड़ने लगा। उसे महात्मा जी की बातों में धोखा नज़र आने लगा और एक दिन चुपके से कुटिया छोड़ दी। उदासी और अकेलेपन के भाव लेकर अपने गाँव के पास एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। गाँव वाले उसे खाना देने लगे। गाँव के एक जमींदार को एक बकरी दान देने का संकल्प उठा। किसी ने उसको सुझाव दिया कि अपना रामदास किसी महात्मा से शिक्षा लेकर आया है, उसी को बकरी दान में दे दो। इस प्रकार, रामदास को एक बकरी मिल गई। वह उसकी प्यार से पालना करता, हर समय अपने पास रखता और रात को उसके पास सो जाता। जीवन में जैसे एक साथी उसे मिल गया। उसने बकरी का नाम साथी रख दिया। प्यार से उसको कहता - आओ साथी, पानी पीओ, घास खाओ, छाया में बैठो। बकरी भी यह नाम लेते ही उसके पास दौड़ी आती। रामदास अब प्रसन्न था कि कोई तो अपना मिल गया परन्तु एक दिन बेचारे रामदास की बकरी कहीं खो गई।रामदास ने उसे 'साथी, ओ साथी' कहकर पुकारा परन्तु वह आई नहीं। पागलों की तरह वह इधर-उधर दौड़ने लगा। प्रत्येक व्यक्ति को पूछने लगा कि तुमने मेरे साथी को देखा। एक व्यक्ति ने पूछा कि कौन साथी ? रामदास ने बताया कि मेरी बकरी, लाल रंग की है। उस व्यक्ति ने कहा कि ऐसी बकरी को मैंने गाँव के खेतों में भागते हुए देखा है। रामदास 'साथी, ओ साथी' पुकारता हुआ एक खेत से दूसरे खेत में दौड़ने लगा। पागलों की तरह दौड़ते रामदास का सामना उसी महात्मा से हो गया जिसने उसे भगवान का नाम जपने के लिए कहा था। आश्चर्य से महात्मा ने पूछा - ''किसको ढूँढ़ रहे हो ?''

रामदास ने रोते हुए कहा - ''हाय, मेरा साथी खो गया।'' महात्मा ने पूछा - '' साथी कौन ?'' रामदास ने कहा - ''गुरुजी, बकरी।'' सुनते ही महात्मा जी हँस पड़े और कहा - ''अरे बेटा, रामदास के स्थान पर तू बकरीदास बन गया। अरे बकरीदास, तेरा सच्चा साथी तो ईश्वर है जो कभी तेरा साथ नहीं छोड़ेगा। जिस प्रकार तू बकरी के मोह की दासता में बँधा है, उसी प्रकार यदि सच्चे साथी ईश्वर की सच्ची प्रीत की डोरी में बँधा होता तो तेरे कल्याण के द्वार खुल जाते।

हम देखते हैं कि आज का मानव भी कभी मकानदास, कभी नौकरीदास, कभी धनदास, कभी

मनदास, कभी पुत्रदास और न जाने कितनी चीज़ों और बातों का दास बना मारा-मारा फिरता है। भले ही वह मुख से स्वयं को प्रभु का दास कहता है परन्तु कर्मों से तो वस्तु, वैभव, विकार और व्यक्तियों की दासता में बँधा है। यह दासता ही मानव मन को पल-पल उदास करती है परन्तु जो प्रभु को सच्चा साथी बना लेता है, प्रभु के प्रेमरस का सच्चाई से पान करता है वह सर्व दासताओं से मुक्त होकर राजा बन जाता है। सुदामा सच्ची प्रीत के बल से सोने के महल पा गया। हम भी सच्ची प्रभु-प्रीत से प्रभु के रचे स्वर्ग में उच्च पद, स्वस्थ काया, अखुट दौलत और सुखदाई सम्बन्ध पा लेंगे। ❑❑

– महाशिवरात्रि पर्व महान –

– आनन्द कृष्ण जायसवाल, सुलतानपुर

महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है यह सर्व महान।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् द्वारा प्राणिमात्र का हो कल्याण।।
कर्मकाण्ड, औपचारिकता ने, आध्यात्मिक सच का लिया स्थान,
तब बनते सर्वनाशार्थ अणुबम, संहारक होता विज्ञान।
दोहन अति प्रकृति का करके, क्षरण परत होता ओज़ोन,
मौसम असम, ताप में वृद्धि, प्राकृतिक आपदा, जल-अवसान।
होती जाती ग्लानि धर्म की, बढ़ता जाता पापाचार,
धर्म स्थापन हेतु तभी ही, प्रभु-शिव लेते हैं अवतार।
तब शिवशक्ति से तमस नष्ट कर, शिव हरते हैं अज्ञान,
महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है यह सर्व महान।।
नूर, 'डिवाइन लाइट' शिव ही, ज्योति स्वरूप वही ओंकार,
शिव कल्याण स्वरूप स्वयं है, लिंग रूप प्रतिमा आकार।
आशुतोष, विषपायी शिव ही, सब दुर्गुण करते स्वीकार,
आओ, मोह, मद करें समर्पित, स्व मन बनायें शिव आगार।।
गुण लें अवढरदानी के हम, अवगुण सारे कर दें दान।
महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है यह सर्व महान।।
वैर-बेर और घृणा-धतूरा, व्यसन रूप भांग भी चढ़ायें,
विषय-वासना और पाप के, अक फूल शिव को सौंप के आयें।
संयम रख संकल्प करें हम अवगुण तज, सब गुण अपनायें,
संगम युग में रहें समीप, संग शिव बैठ विचार बनायें।।
आत्मज्योति को ज्योतित रखें और न लें नींद अज्ञान।
महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है ये सर्व महान।।
दिव्यगुणों को धारण करके, सुख-शान्तिमय हो जीवन,
कुसंस्कार, आसुरी वृत्ति का, काम-क्रोध का कर तर्पण।
अन्यों की न बुराई देखें, स्वदुर्गुण देखें ज्ञान-दर्पण,
पवित्रता के पुरुषार्थ द्वारा करें अशुद्धि सब अर्पण।।
कलियुग फिर सतयुग बन जाये, व्यक्ति-व्यक्ति का हो निर्माण।
महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है ये सर्व महान।।

शिव हैं भण्डारे भरपूर करने वाले....पृष्ठ 03 का शेष

सतयुग के आरम्भ के सारे संगम काल का नाम है इसलिए इस सारे काल में हमें आत्मा का जागरण करना है और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना है। यदि हम ऐसा न करके केवल एक रात्रि पवित्र रहने के बाद काम रूपी विष का सेवन करते हैं तो मानो हम केवल एक रात्रि ही 'शिवरात्रि' मनाकर फिर नित्य 'विषरात्रि' मनाते हैं, हम केवल एक रात्रि ही 'शिव संकल्प' और फिर नित्य 'विष संकल्प' करते हैं। इससे हमारे जीवन का कल्याण नहीं हो सकता। हमें तो वर्तमान संगमयुग को 'शिवरात्रि' समझ कर सतयुग रूपी दिन चढ़ने तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए और आत्मिक अर्थ में 'जागते' रहना चाहिए। इस प्रकार शिव को जानने से सुख-शान्ति के भण्डारे भरपूर और काल-कण्टक सब दूर हो जायेंगे। ✱✱✱

अंधकार को चीरती एक किरण

कृष्णगिरी, तिहाड़ सेन्ट्रल जेल, नई दिल्ली

तिहाड़ जेल, जो अब आश्रम जैसी लगती है, में आकर मन में इतने ऊँचे विचार पैदा हो सकते हैं, यह मैं सोच भी नहीं सकता था क्योंकि यहाँ पर ऐसे लोग ज्यादा हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी-न-किसी गलती के शिकार हुए हैं। उन्हीं में से मैं भी एक हूँ। जन्म ब्राह्मण कुल में होने पर भी मुझे अच्छे संस्कारों की शिक्षा नहीं मिली। मेरा बचपन समाज के गलत तत्वों के संग से अज्ञान में भटक गया। जो समय स्कूल में पढ़ने, माँ-बाप और गुरुजनों से सीखने का था, उसमें मैं मार-पीट, छीना-झपटी, यातनाएँ देने तथा पीड़ा पहुँचाने में लिप्त हो गया। दुनिया के विद्यालयों, तीर्थ-स्थलों, उपासना-गृहों एवं प्रवचनों से मुझे कोई शान्ति नहीं मिली लेकिन तिहाड़ जेल में आकर ऐसा माहौल और राजयोग की शिक्षा मिली कि जीवन बदल गया है। शुरू में राजयोग के अभ्यास में मुझे नीरसता महसूस हुई मगर ब्रह्माकुमारी बहनों के अमृत-तुल्य वचनों ने सारी नीरसता हटा कर, अभ्यास के आनन्ददायी होने की अनुभूति दी। इस अभ्यास के द्वारा अपने अतीत से मुझे नफरत हो गई और अच्छाई तथा बुराई के भेद का ज्ञान होने लगा। पिछले चार वर्षों के लगातार अभ्यास से मेरी सारी शारीरिक बीमारियाँ खत्म हो गयीं। मुझे अपन्डिस, बाय का दर्द, आधाशीशी और कभी-कभी चक्कर आकर बेहोश हो जाना आदि बीमारियाँ थीं, जो चिकित्सकों की भारी फीस का खर्च उठाने के बाद भी ठीक नहीं हुई थीं। आज मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ।

अब मुझे मानसिक बीमारी, चिन्ता तथा तनाव आदि कुछ भी नहीं है और पूर्ण शान्ति महसूस करता हूँ। प्रथम, तो मन में गन्दे विचार आते नहीं, यदि कोई कुविचार आ भी जाता है तो परमपिता परमेश्वर की याद से मुझे ऐसा महसूस होता है कि वह हमारी सब हरकतों को देख रहा है। इस महसूसता से सारे कुविचार तुरन्त विलीन हो जाते हैं। जब भी अतीत याद आता है, आत्मा धिक्कारती है। खान-पान भी बदल गया है। अब मैं अच्छे मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य के लिए शाकाहारी भोजन पर विश्वास करता हूँ। प्रकृति ने हमारे शरीर के अंगों को शाकाहारी भोजन के अनुकूल बनाया है। प्रकृति के अनुसार भोजन ग्रहण करने से हम कभी भी बीमार हो ही नहीं सकते। ब्रह्माकुमारी आश्रम आने से पहले जब मैं राजयोग से अनभिज्ञ था, तो दूसरों को सताने और पीड़ित करने में गर्व महसूस करता था लेकिन राजयोगी बनकर मुझे अपनी भूल का अहसास हुआ। उन गन्दी हरकतों को याद करके मन अब तो सिहर उठता है। अब अन्तरात्मा उन लोगों से क्षमा माँगने को प्रेरित करती है जिनके सम्पर्क में आने पर मुझसे कोई गलत बात हो जाती है। **अब दूसरों को खुशी और सम्मान देने में एक मीठी अनुभूति होती है। अब ऐसा जीवन जीना अच्छा लगने लगा है जो दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करे। अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन दूसरों की खुशी को महत्त्व देकर जीना ही मानवता है।**

कितना बड़ा परिवर्तन आया है मुझमें! मेरा कठोर हृदय अब दूसरों की तकलीफें और दु:ख देखकर करुणा से भर जाता है। समस्याओं को सुलझाने से मन को शान्ति मिलती है। मैंने समझ लिया है कि जन्म से कोई भी किसी का शत्रु या मित्र नहीं होता, यह सब हम अपने व्यवहार से बनाते हैं। बुराई को बुराई से समाप्त नहीं किया जा सकता, भलाई ही

शेष पृष्ठ....27 पर

अपकारी पर उपकार

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

हम देखते हैं कि प्रकृति की हर कृति में परोपकार की असीम क्षमता समाई है। जैसे कि अपनी जाति को सुरक्षित रखने के लिए पेड़ को एक उत्तम बीज ही काफी है, जो उसके एक फल द्वारा निर्मित हो सकता है परन्तु प्रकृति ने उसे, सम्पूर्ण जीवनकाल में एक से कई अधिक फल उत्पन्न करने की क्षमता प्रदान की है। इस सम्बन्ध में हम मानवीय क्षमताओं पर नज़र डालें तो वे भी कोई कम नहीं हैं। मानव के मन, शरीर और कर्मेन्द्रियों की क्षमता भी अपार है। उसे निज जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जितने विचार चाहिएँ, उनसे कई गुणा अधिक विचार उत्पत्ति की शक्ति उसमें है। प्रश्न उठता है कि मन की इस अपार शक्ति का क्या प्रयोजन है? यह उसको क्यों प्रदान की गई है? मन के साथ-साथ शरीर और कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध में भी हम ऐसा ही कह सकते हैं। यद्यपि सम्पूर्ण शारीरिक ढाँचा विचारों द्वारा संचालित है तथापि उसकी अपनी भी अहमियत है। इस ढाँचे में, अपने प्रति खाने, पीने, पहनने, साफ-स्वच्छ रहने आदि के कार्य करने के बाद भी बहुत कार्यक्षमता बनी रहती है। वह कार्यक्षमता किसलिए है?

निश्चय ही जैसे पेड़ का हर अंग परोपकार के लिए है, उसी प्रकार, मानव की समस्त मानसिक-शारीरिक शक्तियाँ परोपकार के लिए ही हैं। कहा जाता है - नदिया न पिए अपना जल, पेड़ न खाए अपना फल। उसी प्रकार, यह भी तो वास्तविकता है कि –

चक्षु खुद को देख सके ना,
मुख ना गाए खुद का गान।
हाथ स्वयं को सहलाए ना,
परोपकार है इनकी शान।।

प्राकृतिक नियम के अनुसार पेड़ के पके फल स्वत: उससे टूटकर गिर जाते हैं। पेड़ का इसमें कोई हस्तक्षेप भी नहीं होता परन्तु चेतन मानव, अपनी अधिक क्षमताओं को यदि मोह की मोटी दिवार में कैद कर लेता है तो परिणाम यह होता है कि निष्प्रयोजन से कैद की गई क्षमता दुष्प्रयोजन में लगने लगती है। इस संसार में कोई भी वस्तु या पदार्थ पहले व्यर्थ बनता है और फिर बदबूदार बनता है। उदाहरण के लिए आलू को उपयोग में लेने के बाद छिलके को व्यर्थ पदार्थ के रूप में वहीं छोड़ दिया तो कुछ समय बाद छिलके के ढेर में कीड़े पैदा होंगे और बदबू आएगी। कहने का भाव है कि पहले जो व्यर्थ था, कुछ समय बाद वह ज़हरीला हो गया। मानव की मानसिक-शारीरिक शक्तियों के सम्बन्ध में भी ऐसा ही है। कुछ समय तक निष्प्रयोजन रहने के बाद वे दुष्प्रयोजन की ओर अग्रसर हो जाती हैं।

वैचारिक क्षमता और कार्यक्षमता का सदुपयोग यदि मनोबल और दुआओं के रूप में दोहरा फायदा देता है तो इनका दुरुपयोग दोहरा नुकसान भी करता है इसलिए मानव को स्वयं के प्रति सदा चौकन्ना रहना चाहिए और अपने मन, वचन, कर्म को पढ़ते रहना चाहिए। उनकी दिशा को देखते रहना चाहिए। उसकी जीवन-गाड़ी स्वतन्त्रता तथा जिम्मेवारी इन दो पटरियों पर चलती है। वह अन्य प्राणियों पर आधिपत्य करता है, प्रकृति को भी सेविका समझता है इसलिए वह श्रेष्ठ समझा जाता है। श्रेष्ठता और स्वतन्त्रता मानो जीवन रूपी गाड़ी की एक पटरी है परन्तु इसको बनाए रखने की जिम्मेवारी मानो दूसरी पटरी है। निजी सुख के लिए किए गए कार्यों की सुगन्ध कुछ क्षण के बाद कपूर की भाँति उड़ जाती है। खुशबू को शाश्वत बनाए रखने का तरीका यही है कि अपने लिए कम-से-कम उपयोग करके शेष शक्ति, साधन और सामर्थ्य को परोपकार में लगाया जाए। कहा गया है - 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई।'

संसार में सब मनुष्य एक जैसे नहीं होते, सबकी क्षमताएँ भी समान नहीं होतीं। यूँ तो बगीचे के सभी फूल

भी समान नहीं होते परन्तु जिसे हम फूल कहते हैं वह किसी मात्रा तक सुगन्ध देने में अवश्य सक्षम है। इसी प्रकार, जिसे हम आदम की सन्तान आदमी कहते हैं उसमें आदम के वंशानुगत गुणों के कारण दूसरों को सुख देने की, भलाई करने की, बिगड़ी को बनाने की क्षमता अवश्य होती है। यदि कोई 'काँच का सामान' यह बोर्ड लगा कर काँच बेचे तो कोई गलत बात नहीं है परन्तु यदि कोई 'हीरों की दुकान' यह बोर्ड लगा कर काँच के टुकड़े बेचे तो यह अपराध है। उसी प्रकार, 'भगवान की सन्तान' इतनी ऊँची उपाधि ले कर 'ईश्वर की श्रेष्ठतम रचना' यह तख्ती गले में लटका कर किसी को नीचे गिराने का, पतन के मार्ग पर ले जाने का, निन्दा, नफरत, ईर्ष्या से जलने का, झूठ, फरेब, धोखाधड़ी, बेईमानी, इल्जाम, शोषण तथा पतित बनाने का कुकर्म किया जाए तो यह घोर अपराध है। इसकी सजा बड़ी सख्त है, यह अल्पकाल की चतुराई पर सदाकाल के लिए खुशी की गँवाई है।

जब किसी को गिराया जाता है तो गिरती चीज़ को देखने के लिए नज़रें भी नीची करनी पड़ती हैं और जब किसी को ऊपर उठाया जाता है तो उठती चीज़ को देखने के लिए नज़रें भी ऊपर उठती हैं। तो क्या पसन्द है? ऊँची नज़रें पसन्द हैं ना। तो क्यों न ऐसे कार्य करें जो नज़रें सदा ऊँची रहें अर्थात् ऊँचा उठाएँ।

जब किसी को दु:ख पहुँचाने का लक्ष्य होता है तो मनुष्य सोचता है कि 'आने दो उसे, ऐसा मज़ा चखाऊँगा', ऐसा सोच कर वह मन की कोठरी से कड़वे से कड़वा शब्द ढूँढता है और उस पर उडेल कर उसे जला देना चाहता है परन्तु उसे स्वयं बहुत परेशानी उठानी पड़ती है, समय और शक्ति का बहुत नाश करना पड़ता है। ज़रूरी कार्यों को दरकिनार करना पड़ता है और यदि उस व्यक्ति से सामना न हो तो मन की काली कोठरी से एकत्रित किया गया काला सामान, आँख में पड़े तिनके की तरह मन में खटकता रहता है। यह खटक सोची थी दूसरे के लिए परन्तु झेलनी पड़ती है लम्बे समय तक स्वयं को।

इसके विपरीत, जब सुख देने की भावना होती है तो मन के खज़ाने से अमूल्य हीरे चुने जाते हैं जो बोल बन कर बाहर प्रकट होते हैं। उनका चिन्तन करते-करते आँखों में चमक आ जाती है, चेहरे पर तेज बिखर जाता है, मुख मीठा हो जाता है, आत्मा हल्की होकर उड़ने लगती है, आत्मविश्वास से मन भर जाता है, स्वयं जीने को मन करता है और दूसरों के जीवन-रास्ते साफ करने में आनन्द आने लगता है। पहले वाली स्थिति तो आग की चिंगारियाँ मुट्ठी में भरने सदृश है और दूसरी, चन्दन घिसने जैसी। विचार कीजिए कि हमें कौन-सी बनाए रखनी है, कौन-सी का अभ्यस्त बनना है।

परोपकार के मार्ग में परीक्षाएँ भी आती हैं। सबसे बड़ी परीक्षा यह आती है कि जो हमारा अहित कर रहा है उसका हित हम कैसे करें? जो हमें जीने देना नहीं चाहता उसकी लम्बी आयु की दुआएँ कैसे करें? ऐसे में मन से निकलता है कि इस एक को छोड़ कर शेष किसी के लिए हम कुछ भी लुटा सकते हैं परन्तु नहीं, जिन्दगी का सवाल हल करने का यह सही तरीका नहीं है। विद्यालय की पढ़ाई में जो जरूरी सवाल होते हैं उनकी तरफ हाथ का चिह्न बना रहता है। यह हाथ बताता है कि इसे हल करना ही पड़ेगा। इसके परीक्षा में आने की सम्भावना पक्की है इसलिए इसे छोड़ा नहीं जा सकता, उपेक्षित नहीं किया जा सकता। आप भी जिसकी तरफ हाथ कर रहे हैं कि अमुक व्यक्ति से निभाना मुश्किल है या उससे अच्छा व्यवहार करना मुश्किल है, उसके प्रति शुभ सोचना दुष्कर है तो आपके हाथ का इशारा ही बताता है कि जीवन के परीक्षा-पत्र का यह सबसे ज़रूरी सवाल है जिसे आपको हल करना ही पड़ेगा, इसे आप छोड़ नहीं सकते। आप चाहे जहाँ जाएँ, चाहे जहाँ से भी परीक्षा दें, यह हाथ के इशारे वाला व्यक्ति भिन्न नाम-रूप से वहाँ भी मौजूद मिलेगा। इससे बचा नहीं जा सकता।

बेहतर यही है कि जहाँ आपका हाथ बार-बार इशारा कर रहा है, उस व्यक्ति के प्रति शुभ सोचना अति ज़रूरी मान लें और आसान बातों में कम शक्ति लगाकर इस अति जटिल बात में सारी शक्ति लगा दें पर हल अवश्य करें। कठिन सवालों के लिए विद्यार्थी रात भर जागता है, सर्व सुखों को त्याग देता है, और भी जाने कितने कष्ट उठाता है पर फलस्वरूप इनाम भी पाता है। आप भी किनारा न करिए, जी तोड़ पुरुषार्थ करके उस व्यक्ति अथवा परिस्थिति को सुलझा लीजिए, ईश्वरीय उपहार, प्यार, दुलार, सत्कार आपकी झोली में अवश्य भरेगा।

प्यारे शिव बाबा कहते हैं - ''सन्तुष्ट को सन्तुष्ट रखना महावीरता नहीं है, स्नेही को स्नेह देना महावीरता नहीं है, सहयोगी के साथ सहयोगी बनना महावीरता नहीं। जैसे अपकारियों पर उपकार करते हैं, ऐसे सहयोग की शक्ति से असहयोगी को सहयोगी बनाना इसको महावीरता कहा जाता है। ऐसे नहीं कि इस कारण से यह नहीं होता है, यह आगे नहीं बढ़ता है। वह बढ़े वा न बढ़े, आप तो बढ़ सकते हो ना।''

जिस व्यक्ति के प्रति मन से दुआ और शुभ कामना निकलती न हो, उसके प्रति शुभ भावनाओं का सागर उमड़ पड़े, यह है अपकारी पर उपकार करना। रामायण आख्यान में महावीर को समुद्र लाँघते दिखाया गया है। किसी की समुद्र जितनी विस्तृत अशुभ भावना को समा लेना, उससे पार चले जाना और उसको भी स्वच्छ कर देना, यह है समुद्र लाँघना। ऐसी आत्माएँ ही विजयमाला के मणके बनती हैं और आधा कल्प भक्तों द्वारा पूजी जाती हैं।

❖❖❖

माया के अनेक रूप

एक आख्यान है कि किसी मनुष्य के घर में एक चूहा कहीं से आ गया था। वह रात-भर इधर किसी चीज को लुढ़का देता, उधर किसी चीज़ को टुक-टुक करता रहता। उस मनुष्य की नींद बिगड़ जाती और उसे बड़ी ख़ार आती। आखिर एक दिन चूहा उसकी चूहेदानी की पकड़ में आ गया और वह मनुष्य उसे बहुत दूर छोड़ आया ताकि वह फिर लौट कर न आ जाय। वह सोच रहा था कि चलो यह झंझट समाप्त हुआ परन्तु जब वह लौटा तो उसने देखा कि घर में बिल्ली आयी बैठी है। अवश्य ही वह दूध पीने के लिए आयी होगी। खैर, उसने बिल्ली को भी भगा दिया। सोचने लगा कि वह भी बला टली। परन्तु क्या देखा कि अब एक कुत्ता आया बैठा है। शायद वह रोटी का टुकड़ा मिलने के विचार से चला आया होगा। वह आदमी कुत्ते को देखकर सटपटा गया और कुछ गहरी सोच में पड़ गया। वह सोचने लगा कि इस दुनिया में चूहे को निकालते हैं तो बिल्ली आ जाती है, बिल्ली को भगाते हैं तो कुत्ता घुस आता है परन्तु शीघ्र ही वह उठा और कुत्ते को भगा दिया और फिर जा कर सुख से बैठा।

ठीक इसी प्रकार, जो मनुष्य ज्ञान-मार्ग पर चलता है, उसे भी माया के कई रूपों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह एक छोटी परीक्षा को पार करता है तो दूसरी बड़ी परीक्षा सामने आती है। उससे अभी निपट रहा होता है कि माया का कोई और बड़ा विघ्न आ जाता है। इस बात को देखकर कई मनुष्य गहरी सोच में पड़ जाते हैं परन्तु वास्तव में उसे घबराना नहीं चाहिए। क्योंकि वर्तमान सृष्टि में तो है ही माया का राज्य। यहाँ माया किसी-न-किसी रूप में तो सामने आती रहती है। ज्ञान की किसी युक्ति द्वारा माया का एक छोटा विघ्न पार करने के बाद दूसरे किसी बड़े रूप में माया की परीक्षा सामने आ ही जाती है। परन्तु धैर्यवत् होकर माया से युद्ध करने वाला मनुष्य आखिर उससे छुटकारा पा लेता है और फिर 21 जन्मों के लिए वैकुण्ठ में सम्पूर्ण स्वास्थ्य, सुख और सम्पत्ति को प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य माया रूपी चूहे और बिल्ली को भगाने के बाद माया रूपी कुत्ते से डर जाता है, वह सम्पूर्ण और सदा काल के सुख की प्राप्ति नहीं कर सकता। ☆☆☆

नशे का नाश

ब्रह्माकुमार प्रमोद चकदल, मधुबनी

पात्र परिचय –

पप्पू – शहर जाकर पढ़ाई करने वाला विद्यार्थी,
रामू – पप्पू का बचपन का दोस्त,
होटल का मालिक,
छोटू – होटल का नौकर,
भोलू, शंकर, भरत – रामू के पड़ोसी,
ब्रह्माकुमार भाई तथा ब्रह्माकुमारी बहन।

(पर्दा उठता है। रामू नाश्ता कर रहा है। पप्पू बाहर से दरवाजा खटखटाता है।)

रामू : आ जाओ भाई, दरवाजा खुला है। *(पप्पू अन्दर आता है।)*

रामू : अरे पप्पू, तुम कब आये?

पप्पू : कल ही तो आया, रात की गाड़ी से।

रामू : कहो कैसी रही शहर की पढ़ाई?

पप्पू : अरे, वहाँ की बात ही अलग है। तू यहाँ क्या कर रहा है? अरे, कभी अपने इस छोटे-से गाँव से बाहर आकर तो देख कि क्या नज़ारा है।

रामू : यार, तुम ठीक कहते हो। अगली बार मैं तुम्हारे साथ ही चलूँगा। अच्छा, तुम आज शाम को पार्टी दे रहे हो ना?

पप्पू : क्यों नहीं, क्यों नहीं, अवश्य दे रहा हूँ।

(एक होटल का दृश्य। कुर्सी और मेज सजे हैं। रामू और पप्पू दोनों साथ-साथ बैठे हैं। पप्पू उठ कर काउन्टर के पास आता है और कुछ कह कर वापस कुर्सी पर बैठ जाता है। होटल का नौकर छोटू शराब की एक बोतल तथा दो गिलास लेकर आता है)

रामू (पप्पू से) : अरे! यह क्या है? तुमने शहर में जाकर यही सब सीखा है क्या? मैं नहीं पिऊँगा।

पप्पू : अरे यार, बिना नशे के जीना भी कोई जीना है।

रामू : तुम क्यों नहीं समझते कि यह तुम्हारे स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकती है।

पप्पू : विष को विष मारता है। जब अन्दर में किसी प्रकार का विष हो तो बाहर से कुछ ले लेना चाहिए।

रामू : मैं नहीं पिऊँगा।

पप्पू : देख, अगर तू नहीं पियेगा तो मैं भी नहीं पिऊँगा और अब से तेरी-मेरी दोस्ती खत्म।

होटल का मालिक : अरे भाई, दोस्ती के लिए लोग ज़हर भी पी लेते हैं और आप शराब की एक घूँट लेने से डरते हैं।

पप्पू : मैं फिर कहता हूँ कि अगर तुम नहीं पिओगे तो तेरी-मेरी दोस्ती खत्म।

रामू : अरे, दे दी न कसम दोस्ती की। चल ला, मगर एक ही गिलास पिऊँगा।

पप्पू : हाँ! यह हुई न दोस्ती वाली बात।

(पप्पू शराब एक गिलास में भर देता है, रामू किसी तरह उसे पी जाता है। अगले दिन दोनों उसी होटल में फिर मिलते हैं।)

रामू : पप्पू, आज मेरी तरफ से चलेगी।

पप्पू : तेरी तरफ से चले या मेरी तरफ से, बात एक ही होगी।

रामू : *(होटल के नौकर को पुकारता है)* अरे छोटू, बोतल लेता आ।

(छोटू दो बोतल लेकर आता है और टेबल पर रखकर चला जाता है। दोनों पीने लगते हैं।)

रामू : पप्पू, तुम मुम्बई कब जा रहे हो?

पप्पू : कल ही सुबह वाली गाड़ी से।

रामू : *(आश्चर्य से)* क्या?

कल ही जा रहे हो ? तुमने मुझे बताया तक नहीं।

पप्पू : हाँ, अचानक जाना पड़ रहा है, फोन आया था।

(अब रामू को शराब की लत पड़ जाती है। रात्रि के 9 बजे हैं। रामू गली में अकेला नशे में झूम रहा है और बड़बड़ा रहा है।)

रामू : इस दुनिया में कोई भी साथ देने वाला नहीं है। पप्पू भी चला गया। अब तो बस बोतल ही एक सहारा है।

(कुत्ते के भौंकने की आवाज आती है)।

रामू : हट, हट। *(पास में पड़ी ईंट उठाने की कोशिश करता है। ईंट नहीं उठने पर स्वयं से कहता है)*

रामू : ये गाँव वाले रात को कुत्ते खोल कर और ईंट बाँध कर रखते हैं।

(कुत्ते के भौंकने की आवाज़ और भी तेज़ हो जाती है। तभी एक राहगीर कुत्ते द्वारा पीछा किए जाने के कारण भयभीत स्थिति में दौड़ता हुआ वहाँ से गुजरता है। उसका पायजामा कुत्ते ने फाड़ दिया है। रामू उसे देख कर हँसते-हँसते लोट-पोट होने लगता है। तभी उसे खाँसी आ जाती है और खाँसते-खाँसते गिर जाता है। अमृतवेले तक वह उसी हालत में पड़ा रहता है। उसका पड़ोसी भोलू भैंस को चारा डालने जाते समय दयनीय दशा में पड़े एक व्यक्ति को देखता है)

भोलू : अरे, कौन है बीच रास्ते पर? *(गौर से देखने पर)* अरे, यह तो अपना रामू है। शंकर, ओ भरत, जल्दी आओ, रामू भैया को अस्पताल ले चलो।

शंकर : अरे, यह कैसे हो गया। उठाओ, चलो, ले चलो।

(अस्पताल में रामू डॉक्टर के सामने कुर्सी पर बैठा है।)

रामू : सर, अब मैं पूरी तरह स्वस्थ हूँ?

डॉक्टर : जी नहीं, तुम्हारे फेफड़े, किडनी तथा मस्तिष्क पर शराब ने ज़ोरदार आघात किया है। आइन्दा अगर शराब पी तो तुम्हें मौत के मुँह से निकालना मुश्किल हो जाएगा। फिलहाल मैं दवा लिख रहा हूँ। इसे तुम खाते रहना।

(इधर होटल के मालिक को चिन्ता हो जाती है कि नया-नया ग्राहक रामू कहीं दूसरे होटल वाले की फुसलाहट में तो नहीं आ गया। वह छोटू से इस बारे में पूछताछ करने को कहता है और उसे बताता है कि रामू जैसे ग्राहकों से ही तो अपने को मोटा लाभ मिलता है। ऐसे दो-चार ही बहुत हैं अपने को। तभी चिन्तित चेहरे के साथ रामू प्रवेश करता है)

छोटू : सर, आप की उम्र बहुत लम्बी है। अभी आप की ही चर्चा चल रही थी। आइए-आइए, मैं अभी बोतल लाता हूँ।

(छोटू का प्रस्थान)

रामू : अरे, तुम कहते हो कि आयु लम्बी है और डॉक्टर कहता है कि ऐसे पीते रहे तो मौत के मुँह से निकालना मुश्किल हो जाएगा।

मालिक : तो आप अब नहीं पीजिएगा?

रामू : *(सीना ठोक कर)* डॉक्टर की वहीं की वहीं रही, मुझे जो करना है करूँगा।

(छोटू द्वारा लाई गई एक बोतल शराब पीने के बाद वह एक और की माँग करता है। छोटू एक बोतल शराब और लाकर रख देता है। रामू उसे भी पी जाता है। फिर एक और मँगवाता है। तीन बोतल पीने के बाद उसे जोर से उल्टी होती है और शराब के साथ खून भी अन्दर से निकलता है। सड़क पर कुछ लोग आ-जा रहे हैं। उसी समय एक तरफ से शंकर तथा दूसरी तरफ से भरत का भी सड़क पर से गुजरना होता है।)

भरत : अरे शंकर, देखो-देखो यह तो वही रामू है न जिसे हम लोगों ने अस्पताल पहुँचाया था?

शंकर : अरे हाँ, वही है। देखो, ऐसी हालत होने पर भी शराब पीना
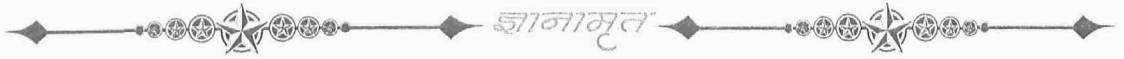
बंद नहीं किया है।

भरत : यह यहाँ कैसे पहुँच गया?

शंकर : आया होगा शराब पीने।

(शंकर और भरत अपने-अपने रास्ते चले जाते हैं)

रामू : *(स्वत:)* मैं क्या करूँ। मैं जानकर भी और चाह कर भी शराब नहीं छोड़ पा रहा हूँ। हे भगवान, मैं इसके बिना रह भी नहीं सकता और इसे साथ रख कर जी भी नहीं सकता, क्या करूँ?

(तभी सड़क पर से सफेद वस्त्रधारी बहनों तथा भाइयों का विशाल काफिला उद्घोषणा करते हुए गुजरता है)

मानव जीवन अमूल्य अपार,
व्यसनों में ना इसे बिगाड़।
पीना शराब का धीमा ज़हर,
अन्दर जा यह ढाए कहर।
ज्ञानामृत प्रभु का उपहार,
नारायणी नशे का हो संचार।
बिना मूल्य के यह मिलता,
इससे तन-मन है खिलता।
मिलता प्रभु का सच्चा प्यार,
इक्कीस जन्म हो जय-जयकार।

रामू : *(बड़ी मुश्किल से रामू उठता है और हिम्मत करके एक ब्रह्माकुमार भाई से पूछता है)* सर, क्या मैं ज्ञानामृत पी सकता हूँ?

ब्रह्माकुमार : देखिए भाई जी, आप हमें सर कह कर नहीं, भाई कह कर बुलाइये।

रामू : भाई जी, क्या मैं ज्ञान-पान से पूरी तरह शराब छोड़ सकूँगा?

ब्रह्माकुमार : जी हाँ, अगर आप ईश्वरीय ज्ञान को अपने जीवन में पूरी तरह उतार लेंगे तो आप शराब के आकर्षण को उतार फेंकेंगे।

रामू : तो आपकी संस्था के क्या नियम हैं, क्या यह हर समय खुली रहती है और फीस कितनी लेते हैं?

ब्रह्माकुमार : मैं पहले आपको यह बता दूँ कि यहाँ कोई फीस आदि नहीं लगती है। सुबह 8 बजे से 12 बजे तक और शाम के समय 4 बजे से 8 बजे के बीच किसी भी समय आकर आप आधा घंटा समय, सात दिन तक दें तो जीवन से सम्बन्धित श्रेष्ठ ईश्वरीय शिक्षा पा सकोगे।

रामू : मैं आज ही आऊँगा। अवश्य आऊँगा।

(प्रथम दिन ही रामू को आत्मिक जागृति आना प्रारम्भ हो जाती है। उसे अपने शुद्ध आत्मिक रूप की सुन्दर अनुभूति हो जाती है। धीरे-धीरे स्वमान के नशे में टिक कर वह शराब के नशे से पूर्ण मुक्त होने की शपथ ग्रहण करने के लिए तैयार होता है।)

रामू : बहन जी, शिवरात्रि का पावन पर्व समीप है। अब तक मैंने बहुत भाँग-धतूरा शिव पर चढ़ाया है। परन्तु इस शिवरात्रि पर मैं यह शराब की बोतलें और नशे की आदत को भगवान शिव पर अर्पण करता हूँ। कहा गया है - 'प्राण जाई पर वचन न जाई।' कैसी भी परिस्थति हो मैं शराब या अन्य किसी व्यसन को संकल्प से भी नहीं छुऊँगा।

ब्रह्माकुमारी : अच्छी तरह सोच लो, यदि शहर से आकर आपके दोस्त ने पुन: दोस्ती की कसम देकर पिलाने की कोशिश की तो?

रामू : बहन जी, अब तो भोलानाथ भगवान मेरा सच्चा दोस्त है। उससे प्राप्त हुई अविनाशी दोस्ती के आनन्द का वर्णन करके अब तो मैं पप्पू की भी यह लत छुड़ाऊँगा। जैसे उसने कसम देकर मुझे पीना सिखाया मैं भी भगवान शिव के प्रति अपने प्यार की कसम देकर उससे शराब छुड़वाऊँगा।

ब्रह्माकुमारी : प्यारे बाबा की याद के बल से सफलता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है।

(रामू का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठता है। वह सामने रखे ज्योतिर्बिन्दु शिव के चित्र को स्नेह भरे नेत्रों से निहारने लगता है)।

✧✧✧

प्रभु का साथ और दुआओं का हाथ

– ब्रह्माकुमारी शकुन्तला, वास्को-डी-गामा (गोवा)

मेरा जन्म वास्को-डी-गामा, गोवा में एक जवाहरी के घर में हुआ। बचपन में ही पिताजी गुज़र गये। लौकिक संबंधियों ने लौकिक माँ के भोलेपन का फायदा उठाकर घर का पूरा धन लूट लिया। हमारी दुखी अवस्था देख लौकिक नानीजी माताजी और हम तीन भाई-बहनों को अपने साथ ले गई। माँ और नानी ने हिम्मत करके, दिन-रात कष्ट सह करके हमें पाला। पढ़ाने की आर्थिक ताकत उनमें नहीं थी लेकिन मेरी ज़िद्द थी कि मुझे पढ़ना है। अँग्रेजी भाषा पढ़ने का मुझे बेहद शौक था। भगवान ने गुप्त रूप से मदद करके मेरी यह इच्छा पूरी की।

मैं जब चौथी कक्षा में पढ़ रही थी तब एक डॉक्टर के बच्चे मेरे सहपाठी थे। डॉक्टर साहब ने लौकिक माँ को घर के कार्य में मदद के लिये बुलाया। उसी समय मेरी पढ़ाई रुकवा दी गई क्योंकि माँ पढ़ाई का खर्चा नहीं उठा सकती थी। रोते-रोते मैंने कहा कि मुझे सिर्फ आठ दिन के लिये अँग्रेजी स्कूल में भेजो। डॉक्टर के परिवार को रहम आया और उन्होंने माँ को कहा – ''आप इसकी चिंता नहीं करो, हम इसकी पढ़ाई की जिम्मेवारी लेंगे''। इस प्रकार अनेक सहृदय आत्माओं के सहयोग से मैंने एस.एस.सी. पास की, स्टेनोग्राफी भी की। घर में भी मैं माँ और नानी को मदद करती थी, बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाती थी और कपड़े भी सिलाई करती थी।

माँ और नानी ने हम सबके अंदर बहुत अच्छे संस्कार भरे। भगवान के ऊपर पूर्ण श्रद्धा रखना सिखाया। वे कहती थीं कि गरीबों का साथी तो भगवान ही होता है। उनकी श्रेष्ठ शिक्षाओं से सत्य मार्ग पर चलना, किसी को दु:ख नहीं देना, नम्रता से सबके साथ व्यवहार करना, सामने जवाब नहीं देना, सहन करना, चोरी नहीं करना, भले ही भूखे रहें परन्तु किसी से माँगना नहीं, ऐसे ऊँचे संस्कार हमारे बन गये।

छोटी-सी उम्र में ही मैं गंभीरमूर्त होकर के हरेक का पार्ट देखती थी। मैंने देखा कि मनुष्य बड़ा मतलबी है। अपने स्वार्थ के लिये कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। गरीबों का, भोलों का पूरा फायदा उठाता है। उनको आगे बढ़ने नहीं देता है। मैंने दृढ़ संकल्प किया कि मैं अँग्रेज़ी पढूँगी और अच्छी-सी नौकरी करके माँ और नानी को मेहनत से छुड़ाऊँगी और भाई तथा बहन को पढ़ाकर उनको भी अपने पैरों पर खड़ा कर दूँगी। मेरे उमंग-उत्साह की कोई सीमा नहीं थी। मेरे शुभ संकल्पों को पूर्ण करने के लिये भगवान ने कइयों का शुभ सहयोग दिलवाया। पढ़ाई पूरी होने के बाद मुझे अच्छी कंपनी में नौकरी मिल गयी स्टेनोग्राफर की। मैं बहुत सच्चाई से और अथक होकर काम करती थी क्योंकि मुझे अपने जीवन में बहुत उन्नति करनी थी। माँ, नानी, भाई-बहन सभी मेरी सेवा से खुश थे।

मेरे लौकिक परिवार के कुल देवता श्रीकृष्ण हैं, मैं उनसे बहुत प्यार करती थी। उनका फोटो देखकर मैं नाचती थी। मैं भी उनके जैसी बनूँ, यह अन्दर की भावना थी परन्तु कैसे? कौन बनायेगा मुझे ऐसा? यह प्रश्न बार-बार सामने खड़ा होता था। मैं उनकी कहानियाँ सुनती थी, पढ़ती थी। मुझे संगीत का बहुत शौक था, मैं अच्छा गाती भी हूँ। मेरी इच्छा थी कि मैं पार्श्वगायिका बनकर बहुत पैसा कमाऊँ और विश्व की भी महान सेवा करूँ। परन्तु घर की जिम्मेवारी मुझे

गोवा से बाहर जाने की अनुमति नहीं देती थी। फिर भी मैं संगीत सीखने जाती रही।

दस साल नौकरी करते-करते मैंने जीवन में अनेक अनुभव प्राप्त किये। मुझे इस दुनिया से वैराग्य आने लगा। शादी से तो मुझे पहले से ही वैराग्य था। जब भी लौकिक संबंधी शादी के बारे में चर्चा करते थे तो मैं उनको एक ही जवाब देती थी कि अगर शादी करूँगी तो श्रीकृष्ण से। यह सुनकर वे चुप हो जाते थे।

मेरे विचार दुनिया के लोगों से बिल्कुल न्यारे थे कि मुझे कुछ अच्छा करके दिखाना चाहिये। दुनिया के रीति-रिवाजों को, स्वभाव-संस्कारों को बदलना चाहिये। मेरी इस प्रकार की श्रेष्ठ भावनाएँ थीं कि **हम नि:स्वार्थ भावना से कार्य करें और एक-दूसरे के साथ प्यार और सद्भावना से व्यवहार करें। जीवन सुखी, शांत, निरोगी और समृद्ध हो। नारी शक्ति का उत्थान और सम्मान हो। जाति, धर्म, भाषा, अमीर, गरीब, ऊँच-नीच, स्त्री-पुरुष का भेद मुझे बिल्कुल पसंद नहीं था।**

एक दिन मैं किसी के घर में गणेश-पूजा पर गयी थी। वहाँ पर मैंने श्रीमद्भगवद्गीता देखी जिसके ऊपर श्रीकृष्ण का चित्र था। मेरी तीव्र इच्छा हुई कि मैं वो किताब पढ़ूँ और मैंने पढ़ने के लिये उसे ले लिया। अपने विचार श्रीमद्भगवद्गीता के अनुकूल देखकर मुझे गर्व हुआ कि भगवान के और मेरे विचार एक हैं। मुझे दृढ़ निश्चय हो गया कि मैं सही मार्ग पर हूँ। उस दिन से मैंने श्रीमद्भगवद्गीता और भगवान को अपना सच्चा साथी मान लिया।

नौकरी पर जाते समय शिव के मंदिर में जाने का मेरा संस्कार बन गया था। मंदिर हमारे घर के पास ही था। भगवान को मैं रोज कहती थी – ''सबको सुखी रखो''। सन् 1973 की बात है, मैंने एक सपना देखा कि कार्यालय जा रही हूँ और जाते-जाते उस शिव के मंदिर में गयी हूँ। वहाँ शिवलिंग नहीं था, न ही पुजारी था और न कोई अन्य। मैं सोच में पड़ गयी कि आज शिव की प्रतिमा कहाँ गयी? स्वाभाविक है कि मैंने हाथ नहीं जोड़े और उसी सोच में वापस जाने लगी, तो पीछे से आवाज आयी – ''मैं यहाँ हूँ''। आश्चर्यचकित हो मैंने पीछे मुड़ कर देखा। कोठरी के दायीं तरफ एक लंबा तथा सफेद वस्त्रधारी व्यक्ति खड़ा था। हाथों के इशारे से उसने मुझे अपने पास बुलाया और कहा – ''जो चाहिये, वो माँगो''। मैंने कहा – ''सब को सुखी रखो''। उसने कहा – ''ठीक है''। इतने में मेरी आँखें खुल गयी। एक सप्ताह के बाद मैंने सपने में देखा कि चाँदी की एक सुंदर श्रीकृष्ण की मूर्ति ज्योति के प्रकाश में चमक रही है। मुझे स्वप्न में देखी मूर्ति का इतना आकर्षण हुआ कि मैं उसे ढूँढ़ने के लिए अनेक जवाहरातों की दुकानों पर चक्कर लगाती रही। आखिर एक दुकान में कमल पुष्प में खड़े, मुरली बजाते श्रीकृष्ण की चाँदी की वैसी ही मूर्ति मुझे मिली। मैंने एक छोटा-सा मंदिर बनवा कर उसमें उसको रखा और रोज़ उसकी पूजा करने लगी।

कुछ दिनों के बाद मुझे अन्दर से आवाज आने लगी कि मुम्बई जाओ तो भगवान मिलेगा। अब इस बात पर मेरे सिवाय और कौन विश्वास करता? सुनने वाले तो हँसी ही उड़ाते। मैंने यह बात किसी को भी नहीं बतायी परन्तु अन्दर से तात लगी रहती थी भगवान से मिलने की। आखिर एक दिन मुझे मुम्बई से एक विदेशी कंपनी में नौकरी के लिये बुलावा आ गया और रहने का स्थान शिवाजी पार्क, दादर में मिल गया। नौकरी के साथ-साथ मैं संगीत कला भी सीखती रही। पार्श्वगायिका बनने के संकल्प से मैं संगीत निदेशक से मिली। मुझे देखते ही उन्होंने कहा कि आप इस वातावरण में नहीं आना। आपका जीवन बहुत महान है। मैंने उनके शब्द मान लिये और मैं सिर्फ

भगवान के लिये और अपने लिये गाने लगी। मैं भगवान से रोज़ पूछती थी – ''हे भगवान! आप मुझे प्रत्यक्ष गीता कब सुनायेंगे? जब आपके मुख से सन्मुख गीता सुनूँगी तब यह गीता पढ़ना बंद करूँगी। आप मुझे मिलेंगे तो तन-मन-धन सहित आपके ऊपर बलिहार जाऊँगी। अपना पता मुझे घर पर आकर देना, मैं ढूँढ़ने नहीं जाऊँगी।'' मुझे विश्वास था कि भगवान मेरी हर बात सुनता है।

सन् 1975 में सवेरे कार्यालय जाते समय दरवाजे के बाहर मुझे एक भाई मिला, उसने मुझे एक पर्चा दिया जिस पर लिखा था ''True Gita Knowledge (सच्चा गीता ज्ञान)'' मेरी खुशी का पारावार नहीं रहा। पर्चे में शिवाजी पार्क के स्क्वेअर सभागार में शिवरात्री के उपलक्ष्य में तीन दिन के कार्यक्रम का निमन्त्रण था। शाम को कार्यालय से लौटी और सभागार में गयी। प्रदर्शनी देखी। मंच पर तीन बहनें बैठी थी सफ़ेद वस्त्र धारण करके। मुझे निश्चय हुआ कि मुझे जो चाहिये था वो यही है। गुड़ी पड़वा (नया वर्ष) के दिन मैं सवेरे सायन सेवाकेन्द्र पर गयी। बृजइन्द्रा दादीजी का क्लास चल रहा था। जैसे ही वो संदली से नीचे उतरी मैंने उनके पाँव पकड़ लिये। उन्होंने मुझे तुरन्त उठाकर गले लगाया। मैं रोने लगी तो उन्होंने मुझे दुर्गा का फोटो दिखाया और कहा – ''तुम ये दुर्गा हो।'' मेरे आँसू बंद हो गये। उसी समय मैंने उनको कहा कि मुझे आश्रम में ही रहना है। उन्होंने पहले सात दिन का कोर्स करने को कहा। मेरी नई पढ़ाई और नया जीवन शुरू हो गया। जिसमें आनन्द आने लगा और दूसरों को संदेश देने में भी मजा आने लगा। दादीजी तथा बापदादा की शुभ-भावना तथा दुआओं से मैं आगे बढ़ती गयी।

धारणा के क्लास सुन-सुन मैं बहुत शक्तिशाली बन गई। अनेक स्थानों पर सेवा के सुअवसर प्राप्त किये। मैं सन् 1982 में शिव बाबा की सेवा में सायंन सेंटर पर समर्पित हुई। दिल से तो उसी दिन समर्पित हो गई थी जिस दिन पहली बार सेवाकेन्द्र पर गई थी। सेवाकेन्द्र पर एक दिन शाम को 6 बजे मैं योग में बैठी थी तो मुझे बाबा ने आवाज दी – ''बच्ची, गोवा में सेवा के लिये जाओ।'' उसके एक-दो दिन पहले बाबा की मुरली चली थी – शिवरात्री धूमधाम से मनाने और हर स्थान पर बाबा का संदेश पहुँचाने की। उसकी छाप मेरे दिल पर थी। उस समय गोवा में एक ही सेवाकेन्द्र था। मुझे यह सोचकर दु:ख होता था कि गोवा की आत्मायें अभी तक भगवान से बहुत दूर हैं। मैंने बृजइन्द्रा दादी को बाबा की आवाज के बारे में बताया कि बाबा ने कहा है – ''बच्ची, गोवा में जाओ।'' दादी ने तुरन्त सारी तैयारी करने को कहा और चार दिन बाद मैं गोवा आ गई। वहाँ अपनी ही जन्मभूमि वास्को-डी-गामा में कार्यक्रम रखा। लौकिक माँ के सहयोग से और बाबा को साथी बनाकर मैं अथक सेवा करने लगी। बाबा ने नया सेवाकेन्द्र खोल दिया। हम दोनों को अथक बनाकर पिछले 18 साल से बाबा दुआओं के हाथ हमारे सिर पर रखकर हमारी संभाल कर रहे हैं। लौकिक माताजी को भी दादीजी ने 1985 में बाबा की सेवा में समर्पित कराया। तन-मन-धन से, सर्व शक्तियों से बाबा हमसे पूरी सेवा करवा रहे हैं, ऐसा भाग्य किसका होगा!

वरदान लुटाने वाले भाग्य-विधाता ने एक गुह्य रहस्य बता दिया कि सन् 1973 में सपने में शिव के मंदिर में मुझे बुलाने वाले ब्रह्मा बाबा थे। वो दृश्य मैं कभी भी भूल नहीं सकती हूँ। अभी भी मेरे रोम-रोम खड़े होते हैं उसे याद करके। बाबा के हाथ सदा ही हमारे सिर पर हैं और सदा ही रहेंगे, यह संपूर्ण विश्वास है। बाबा हमारा सच्चा साथी है। कदम-कदम पर मैं बाबा का शुक्रिया अदा करती हूँ।

▲▲▲

पिताश्री की अप्रतिम एकाग्रता

ब्रह्माकुमार सतीश, आबू पर्वत

एकाग्रता के कई चमत्कार देखने-सुनने को मिलते हैं। संकल्प शक्ति से असम्भव जैसे कार्य सम्भव हुए हैं। स्थूल व सूक्ष्म जगत के सभी तत्व जो सामान्य ढंग से क्रियाशील हैं वे एकाग्रता की विशेष स्थिति से असाधारण कार्य सम्पादित कर सकते हैं । सूर्य के प्रकाश से जीवन व जगत दृश्यमान हैं परन्तु उसकी किरणों को एकत्रित कर सौर ऊर्जा जैसी कई उपलब्धियाँ होती हैं।

जीवन के सभी क्षेत्रों में एकाग्रता की महत्ता है। विद्यार्थी एकाग्रता से अच्छी सफलता अर्जित करते हैं। शोध कार्य में निरीक्षण-परीक्षण के सभी प्रयोग एकाग्रता की ही स्थिति में सफलता तक पहुँचते हैं। कलाकार एकाग्रता से कला में दक्षता प्राप्त करते हैं। खेल में खिलाड़ी अपनी एकाग्रता कायम रख बड़े-बड़े कीर्तिमान (Record) बना लेते हैं। तनिक सी एकाग्रता भंग हुई और परिणाम विपरीत हो जाता है। रचनात्मकता (Creativity) की मौलिकता ही एकाग्रता है।

साधकगण मन की एकाग्रता पर विशेष ध्यान देते हैं। एकाग्रता का शाब्दिक अर्थ है कि मन की वृत्ति एक ही के अग्र हो अर्थात् हमारा संकल्प-विचार एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित हो। अन्य वस्तु न दिखाई दे, न ही स्मरण आये। अर्जुन की भाँति चिड़िया की आँख के अतिरिक्त कुछ भी नज़र ना आये। प्राय: हर व्यक्ति यही चाहता है कि अन्तकाल में एक परमात्मा की ही स्मृति रहे और उसके लिए तमाम प्रयास जीवन भर जुड़ाये जाते हैं। भक्त, ईश्वर के साक्षात्कार के लिए, साधक सिद्धि के लिए, प्रभुप्रेमी निरन्तर प्रभु-स्मरण के लिए मन की एकाग्रता का बहुत ध्यान रखते हैं। इस उपक्रम में वे नासिका के अग्र भाग पर ध्यान, श्वसन क्रिया का अवलोकन, त्राटक क्रिया, ध्यान आसन, प्राणायाम, रुद्राक्ष माला-जाप, भजन-कीर्तन, रूप-स्मरण, मूर्ति व प्रतीकों का सहारा लेते हैं। इसे विडम्बना ही कहेंगे कि एकाग्रता के लिए जुटाये गये यही संसाधन व उपक्रम कालान्तर में आराधना के बजाय आराध्य माने जाने लगे। अमूर्त को भुला कर मूर्त की ही पूजा होने लगी। वास्तव में एकाग्रता तो एक स्थिति है, प्रक्रिया है, साधन व माध्यम है जिसका सदुपयोग अथवा दुरुपयोग साधक के हाथ में है। एकाग्रता भी कई प्रकार की है - वैचारिक एकाग्रता, दृष्टि की एकाग्रता, भावनात्मक एकाग्रता, निश्चयात्मक एकाग्रता, व्यवहारिक एकाग्रता आदि-आदि।

एकाग्रता की जीवन्त मिसाल

प्रजापिता ब्रह्मा की एकाग्रता अप्रतिम थी। उनके जीवन में घटित होने वाली एकाग्रता एक सहज किन्तु अद्भुत घटना थी। परमपिता परमात्मा शिव की प्रवेशता होने पर ईश्वरीय साक्षात्कारों ने उन्हें एकाएक इस विनाशी संसार से उपराम कर दिया। नये विश्व के निर्माण की प्रभु योजना ने उन्हें साधारण से असाधारण बना दिया। ईश्वरीय प्रेम से ओतप्रोत वे योगियों में परमयोगी बन गये। सहजयोग के वे स्वरूप बन गए। ईश्वरीय महिमा में मग्न उनका जीवन महिमावान बन गया। वे अक्सर कहा करते थे - 'प्रिय वत्सो! ईश्वर के केवल गुणगान ही नहीं करो, तुम्हें गुणवान भी बनना है।'

राजयोग में एकाग्रता की भूमिका

योगाभिलाषी के लिए मानसिक एकाग्रता अति आवश्यक है क्योकि योग है ही - आत्मस्मृति एवं परमात्मा स्मृति द्वारा सम्बन्ध जोड़ने का नाम। इसमें सभी स्थूल बातों से मन को हटाकर अति सूक्ष्म आत्मा एवं

परमात्मा को अंतश्चक्षुओं से देखना होता है। ज्ञान द्वारा सम्बन्धों का स्मरण कर स्नेह का अनुभव किया जाता है। निर्मिमेष (unwinked) आँखें अपने परमप्रिय से मिलन की अवस्था में पलकें झपकाना तक भूल जाती हैं। लवलीन स्थिति में स्थित होकर आत्मा, परमात्मा से एकाकार हो जाती है। यही सम्पूर्ण एकाग्रता है। इसी लवलीन स्थिति को शास्त्रीय भाषा में लीन होना कहते हैं। वास्तव में, एकाग्रता निर्सकल्प स्थिति के लिए नहीं है बल्कि उस शक्तिशाली स्थिति के लिए है जिसमें मन-बुद्धि सहज स्थिर होकर परमानन्द सिन्धु में समा जायें। एकाग्र बुद्धि ही तीसरे नेत्र का काम करती है।

एकाग्रता में बाधक तत्व

सांसारिक तृष्णाओं के पीछे भागता मन, विकारों का सूक्ष्म रस लेता मन, विनाशी वैभवों व सुन्दरता के प्रति आसक्त मन, भय, संशय एवं तनाव से ग्रस्त मन एकाग्रता के स्वप्न भी नहीं देख सकता। बहिर्मुखता, मान-शान की इच्छाएँ-कामनायें, चिन्ता, क्रोध, मोह, विकर्म आदि योगाभ्यासी जनों के लिए हानिकारक हैं। राजयोग स्थूल एकाग्रता नहीं है। यह श्रेष्ठ स्वरूप, स्वदेश, स्वकर्म, स्वलक्ष्य की स्मृति में मग्न रहने की सहज प्रक्रिया है। दृष्टि की एकाग्रता संकल्पों को एकाग्र बनाने में मात्र सहायक होती है। वाणी की एकाग्रता बोल को वरदानी बना देती है एवं कर्मों में एकाग्रता सफलता व सन्तुष्टता का आधार है। बिना मनोबल के सांसारिक प्रलोभनों एवं आकर्षणों से मुक्त रहना आसान नहीं। योगबल से हम व्यक्ति एवं प्रकृति समेत सारी सृष्टि का परिवर्तन करते हैं इसलिए भी राजयोग में एकाग्रता की महत्ता और अनिवार्यता बढ़ जाती है। उपर्युक्त धारणाओं का व्यवहारिक रूप हमें पिताश्री के जीवन में स्पष्ट रूप से मिलता है। यों तो उनके पदचिन्हों पर चलते आज कई ब्रह्मा-वत्स विश्वसेवा में पूर्ण समर्पण हैं किन्तु ब्रह्मा बाबा का व्यक्तित्व एवं कर्त्तव्य समस्त विश्व के लिए आदर्श एवं उदाहरण है।

उनका जीवन ईश्वरीय स्नेह एवं सन्निकटता से इतना ओतप्रोत था जो सहज निर्विकल्प समाधि उनकी दिनचर्या में शामिल थी। स्थितप्रज्ञता उनका स्वभाव बन गया। उनके सान्निध्य में आने वाली हर आत्मा देह व देह की दुनिया से पार विदेह अवस्था और ईश्वरीय आनन्द की अनुभूति करने लगती थी। उनकी यह अलौकिकता व विलक्षणता उन दिनों लोकचर्चा का विषय बन गई थी कि दादा कोई जादूगर हैं जो सब पर अपने जादू का प्रभाव डाल देते हैं जबकि ऐसे लोग जानते ही नहीं थे कि यह ईश्वरीय स्नेह, शक्ति अथवा प्राप्ति का परिणाम अथवा ईश्वरीय योजना का अभिन्न पार्ट था।

पिताश्री ने ईश्वरीय आदेशों को पूर्ण निश्चयात्मक और निर्भय हो, ईमानदारी से पालन किया। उन्होंने नये विश्व के निर्माण की ईश्वराज्ञा पाते ही पुरानी दुनिया के अपने व्यवसाय-कारोबार को ही नहीं समेटा बल्कि अपनी वृत्ति को भी उपराम कर लिया। कई प्रकार के विघ्नों-बाधाओं के बावजूद भी ईश्वरीय योजना में और ईश्वर में उनका निश्चय व प्रेम कम न होना उनकी मानसिक दृढ़ता का द्योतक है। उनकी वृत्ति बेहद में थी। वे श्वासोंश्वास अपने परमप्रिय से संलग्न एवं सम्बद्ध रहने की सहज एवं निरन्तर तपस्या में थे। उनके सहज पुरुषार्थ ने कइयों को सहजयोगी बना दिया। उनका अप्रतिम योगबल सभी को सम्पूर्णता एवं सम्पन्नता की ओर अग्रसर करने में सहायक रहा। ध्यान रहे कि यह उनका मात्र गुणानुवाद नहीं है बल्कि एक जीवंत तस्वीर है। पिताश्री का आद्योपान्त जीवन सम्पूर्ण एकाग्रता का दिव्य दर्पण था जिसमें हमें भी स्वयं को देखते-सँवारते संसार को स्वर्ग बनाना है।

❖❖❖

ओमशान्ति हेल्प लाइन

सर्व मनुष्यात्माओं को समस्याओं का सहज समाधान और सर्व प्राप्तियों का सही रास्ता मिले, इस नेक व नि:स्वार्थ उद्देश्य को लेकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा 'ओम शान्ति हेल्प लाइन' की सेवा शुरू की गई है। संसार का सबसे बुद्धिमान प्राणी मनुष्य भी जीवन में कभी-कभी ऐसे मोड़ पर आ जाता है कि उसे जीवन निरर्थक महसूस होने लगता है और कभी-कभी तो आत्महत्या के विचार भी आते हैं। ऐसे समय, 24 घंटे स्वाचालित 'ओम शान्ति हेल्प लाइन' जड़ीबूटी की तरह नया जीवन प्रदान कर रही है। इस हेल्प लाइन पर आप प्रतिदिन नये सुविचार भी सुन सकते हैं। इस स्वचालित कम्प्यूटराइज़्ड हेल्प लाइन का किसी भी वक्त लाभ लिया जा सकता है। वर्तमान समय, भारतवर्ष के 12 राज्यों के 18 शहरों में संस्था के सेवाकेन्द्रों के द्वारा यह सेवा उपलब्ध कराई गई है।
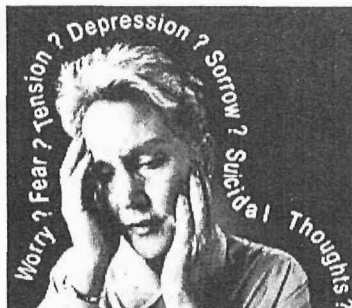
उपरोक्त हेल्प लाइन के द्वारा कई लोगों ने अनिद्रा से, डीप्रेशन (अवसाद) से, तनाव से और यहाँ तक कि आत्महत्या के विचारों से भी मुक्ति प्राप्त करके नवजीवन प्राप्ति का अनुभव किया है।

बड़ौदा के पुलिस अधीक्षक भ्राता आर.एच. नाथानी ने इस सेवा का लाभ लेकर इसकी सराहना करते हुए कहा कि इस हेल्प लाइन से समाज में अपराधवृत्ति कम होगी और दु:खी लोगों को सांत्वना भी मिलेगी। बी.एस.एन.एल., अहमदाबाद के सह-निदेशक भ्राता बाबू भाई प्रजापति ने अपना मंतव्य दिया कि आधुनिक तकनीक के शुभ प्रयोग से आध्यात्मिक ज्ञान देकर लोगों में एकता व भाईचारा लाने का संस्था का यह प्रयास सराहनीय है।

सचमुच, यह एक 'कम खर्च, अधिक उपादेयता' वाली सेवा है। हमारी अधिक व्यस्त दिनचर्या में कम्प्यूटर भी सहयोग देने के योग्य बन जाता है। जिन सेवाकेन्द्रों पर कम्प्यूटर हैं, वे एक अलग फोन लाइन जोड़ कर ये सेवा शुरू कर सकते हैं अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें –

ब्र.कु. आनन्द भाई, महादेवनगर सेवाकेन्द्र, अहमदाबाद और ब्र.कु. सूर्यमणि भाई, ट्रान्समिशन विभाग, शान्तिवन, आबू रोड। ***

इस सेवा का लाभ लेने के लिए निम्नलिखित में से किसी भी नंबर पर फोन कर सकते हैं

अहमदाबाद (079) 6408185, 6408696, 2862351. **देहली** (011) 27034050, 27113074. **मुम्बई** (022) 55982444. **विशाखापट्टनम** (0891) 2525858. **बैंगलोर** (080) 6527098. **जबलपुर** (0761) 5036441. **कोलकाता** (033) 22237777. **भुवनेश्वर** (0674) 2545611. **मोहाली** (0172) 2274024. **मेडक** (08452) 220528. **भीलवाड़ा** (01482) 232324. **जलगाँव** (0257) 2234445. **जामनगर** (0288) 2558480. **बीजापुर** (08352) 224643. **बहादुरगढ़** (01276) 218980. **बठिण्डा** (0164) 2221684. **सातारा** (02162) 232150. **सोलापुर** (0217) 2627426. **अम्बाला कैन्ट** (0171) 266307.

E-mail: madhuban@omshantihelpline.com, **Website:** www.omshantihelpline.com

वैज्ञानिक शोध - आत्मा, पुनर्जन्म और मृत्यु

ब्रह्माकुमारी डॉ. हंसा रावल, अमेरिका

मैंने केन्या (अफ्रीका) के मेडिकल कॉलेज से चिकित्सा विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद स्त्री-रोगों से सम्बन्धित प्रशिक्षण लेना प्रारम्भ किया। इस प्रशिक्षण के दौरान एक रात जब मैं सेवा पर उपस्थित थी तो एक विचित्र जनन-घटना घटी। एक काली (अफ्रीकन) माता ने एक साथ तीन शिशुओं को जन्म दिया लेकिन तीसरे शिशु के जन्म के साथ ही माता के प्राण-पखेरू उड़ गये। बच्चे सुरक्षित थे। मैं घबरा गई। मुझे पता चल गया था कि इन शिशुओं का पिता नहीं है। मैंने मन-ही-मन बड़े कातर स्वर में भगवान को कहा – हे प्रभु, इन बच्चों की माँ तो मर गई, पिता है नहीं, तो इन बिचारों का क्या होगा? इतनी देर में वरिष्ठ डॉक्टर साहब आये, उन्होंने मुझे हिम्मत बंधाते हुए कहा कि आपकी कोई गलती नहीं है, आपने सब कार्य ठीक किया है और जाकर आराम करो। इसके चार घण्टे के बाद नर्स ने आकर मुझे झिंझोड़ा और कहा कि जल्दी उठो, आपातकालीन सेवा है, वह माता जो मर गई थी, फिर से जिन्दा हो गई है, जल्दी चलो। मैं उठकर भागी। देखा तो सचमुच वह जिन्दा थी, मुर्दाघर से उसे वापस लाया गया था। उसके चेहरे पर मेरे प्रति बहुत नफरत के भाव थे, उसने मुझे अपने से दूर हटा दिया तथा मेरा मुँह देखने से भी इंकार कर दिया।

नर्स ने समझा कि यह माता मानसिक उलझन में है इसलिए ऐसा व्यवहार कर रही है। उसने मुझे वापस भेजकर दूसरे डॉक्टर को उसकी सेवा में नियुक्त कर दिया। अगले दिन मैं वार्ड में चक्कर लगाने की सेवा पर उपस्थित हुई तो भी उस माता ने मुझे देख मुँह फिरा लिया। मेरे मन में अनेक प्रश्न उठे कि यह मुझसे नाराज क्यों है। मैंने नर्स को उसके पास इसका कारण जानने के लिए भेजा। नर्स ने बड़े स्नेह से उससे कहा – आपके तीनों बच्चों को रहमदिल बनकर जिसने बचाया उससे आप इतनी नाराज क्यों हैं? वह बोली – जब मेरे शरीर से बहुत रक्त निकला तो मैं (आत्मा) शरीर से निकल गई। मैं ऊपर की ओर उड़ चली। वहाँ एक सुन्दर, सफेद-सफेद प्रकाश था। उस प्रकाश ने मुझे गोदी में ले लिया, बहुत प्रेम दिया परन्तु तभी इस डाक्टर (हंसा बहन) ने उस प्रकाश से कहा कि इन बच्चों की माँ तो मर गई, पिता है नहीं, तो इन बिचारों का क्या होगा। यह सुनकर उस प्रकाश पुँज ने मुझसे कहा कि देखो अभी आपको वापस जाना पड़ेगा। मुझे मजबूरी से इस शरीर में वापस आना पड़ा। नीचे की दुनिया में आने को मेरा मन बिल्कुल तैयार नहीं हो रहा था। मुझे पता था कि वह सुन्दर प्रकाश मुझे अपने पास रखने वाला था। वही इन बच्चों की सम्भाल भी स्वयं ही कर लेता। मुझे इसकी क्या चिन्ता! मुझे तो वहीं मेरे माँ-बाप के पास रहना था।

माता की ये बातें उस समय मुझे बहुत विचित्र लगीं, तब मेरा सम्पर्क ईश्वरीय ज्ञान से नहीं था। कुछ समय बाद मैं उस घटना को भूल गई। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी का जब विदेश में आगमन हुआ तो उनसे मुझे शरीर के पिता और आत्मा के पिता अलग-अलग हैं, यह परिचय मिला। उसी दिन से मैं ईश्वरीय ज्ञान में चलने लगी और लौकिक सेना में भी मेडिकल सेवार्थ चुन ली गई। भगवान

तथा आत्मा के बारे में अधिक-से-अधिक जानने की मुझे लगन लग गई। अनेक प्रकार के रोगियों के सम्पर्क में आने पर अनेक नई और विचित्र बातें जानने को मिलीं। ये ऐसी बातें हैं जिनसे आम आदमी लगभग अनभिज्ञ ही रहता है। आत्मा, परमात्मा, जन्म-मृत्यु आदि विषयों पर अध्ययन करते-करते, अनुभवी बनते-बनते, अनेक गुत्थियाँ सुलझाते-सुलझाते मुझे उस माता के साथ घटी घटना के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण मिला। मुझे पता चला कि **शरीर में रहते हुए किसी आत्मा को चाहे कितना भी कष्ट रहा हो, भले ही वह वृद्ध, बीमार या असह्य वेदना से पीड़ित हो परन्तु शरीर छोड़ते ही ज्योंहि उस सफेद प्रकाश (परमात्मा का स्वरूप) से मिलन होता है तो शरीर भूल जाता है, एकदम नष्टोमोहा बन जाते हैं और देह के सम्बन्ध भी विस्मृत हो जाते हैं। पुनः जन्म लेने पर धीरे-धीरे वे संस्कार वापस आने लगते हैं। यह कुदरती व्यवस्था है। बच्चे को यदि याद रहे कि मैं वृद्ध, बीमार या पीड़ित था तो वह बचपन का आनन्द नहीं ले सकेगा। परमात्मा के सामिप्य का इतना अच्छा अनुभव आत्मा को होता है कि उसकी छोड़े गये शरीर, सम्बन्ध, पदार्थ सबसे रग कट जाती है। इसलिए बच्चा महात्मा समान माना जाता है। परमात्मा रूपी चुम्बक के सान्निध्य से आत्मा का पुराना रिकार्ड सब नष्ट हो जाता है।**

मुझे अनेक योग्य, अनुभवी तथा सुप्रसिद्ध डाक्टरों के साथ पुनर्जन्म पर शोध का सुअवसर मिला। इस शोध में सम्मोहन प्रक्रिया का सहयोग लिया गया। एक मनोवैज्ञानिक बहन को अपनी माता से बहुत प्रेम था। जब माँ ने शरीर छोड़ा तो उसे यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि आखिर माँ कहाँ गई ? इसके लिए वह अलग-अलग शहरों में जाती थी, अखबार में विज्ञापन देकर 500 लोगों को एकत्रित करती थी, उन्हें पैसा भी देती थी। उनको सम्मोहित करके उनसे प्रश्न पूछती थी। कई बार स्वयं को भी इस प्रक्रिया में से गुजारती थी ताकि कोई गलत बात न हो जाये। सम्मोहन क्रिया के दौरान पहला प्रश्न पूछा गया कि आप कौन हो ? सम्मोहित हुए सभी लोगों का एक समान उत्तर था कि मैं चमकता हुआ सितारा हूँ। किसी ने भी अपना शारीरिक नाम नहीं बताया। फिर पूछा – आपका नाम क्या है ? उत्तर मिला – सोल (आत्मा)। पुनः पूछा गया – आप कहाँ से आए हैं ? उत्तर मिला – हम इतने अच्छे तारामण्डल जैसे घर से आये हैं जहाँ शान्ति ही शान्ति है। फिर कहा गया – उस घर का वर्णन करो ? उत्तर में उन्होंने बताया – उस घर में एक बड़ा एकदम चमकता हुआ सफेद-सफेद बहुत सुन्दर सितारा है जिसकी चमक बहुत ज़्यादा है। ज़्यादा चमक वाले सितारे उस बड़े सितारे के बिल्कुल नजदीक रहते हैं। वहाँ जाकर घर में पहुँचने की भासना आती है और एकदम आराम का अनुभव होता है। फिर पूछा गया – यह शरीर क्या है ? उत्तर मिला – यह तो एक चीज़ है जिसे हम धरती पर इस्तेमाल करते हैं, जैसे कि मेज-कुर्सी आदि होते हैं वैसे ही। अगला प्रश्न पूछा गया – गर्भ का अनुभव बताओ ? सभी ने बोला – दुःख, परेशानी, रोना, ऐसा मन करता था कि मर जाएँ और यहाँ से निकल जाएँ। इसलिए हम संसार को देखते ही रोए, हमें पसन्द नहीं कि फिर से ऐसी दूसरी जिन्दगी गुज़ारें।

उपरोक्त सभी बातें ईश्वरीय ज्ञान द्वारा प्रमाणित हैं और अनुभवी डाक्टरों के शोध के परिणाम भी इन ईश्वरीय बातों से शत-प्रतिशत साम्यता रखते हैं। प्यारे शिव बाबा ने हमें गर्भ जेल के बारे में बताया है कि आज का मानव जेल बर्ड बन गया है। जन्म लेता है, पाप करता है, पुनः पापों में मशगूल हो जाता है। संसार में मानव के जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती हैं परन्तु जो जन्म लेता है वह खुश नहीं होता है। उसे संसार

में आने पर रोना आता है। किसी की मृत्यु पर हम अफसोस करते हैं पर जाने वाला खुश होता है क्योंकि उसे परमात्मा की गोद मिलती है। आज मानव चन्द्रमा पर जा पहुँचा है परन्तु निज के जीवन से जुड़े जन्म और मरण के रहस्यों से अनभिज्ञ है। वास्तव में, डाक्टरों का कर्त्तव्य है कि वे अन्य बातों से पहले जन्म और मरण की वास्तविकता से लोगों को परिचित करायें परन्तु चिकित्सा विज्ञान स्वयं भी इन बातों से आज तक लगभग अनभिज्ञ ही रहा है। इन सब शोध कार्यों के द्वारा मुझे महसूस हुआ कि मैं प्यारे बाबा के बहुत नजदीक आ गई हूँ। मैंने मन-ही-मन रूह-रूहान में शिव बाबा को कहा – 'बाबा, आप छिप-छिप कर क्या-क्या करते हो, मालूम पड़ गया है, आपका कारोबार कितना बड़ा है! वैसे तो आपके महावाक्यों में सब सुनते हैं परन्तु मरीजों और आम जनता का अनुभव सुनकर मालूम पड़ता है कि आप विश्व की हरेक आत्मा के पिता हो, हरेक को पितृ-स्नेह देते हो। उपरोक्त अनुभवों में क्रिश्चियन, मुस्लिम आदि सभी धर्मों की आत्माएँ शामिल थीं।

पहली बार, इस प्रकार के अनुभवों को एकत्रित कर एक वैज्ञानिक ने जब प्रकाशित कराने का अनुमोदन पादरी से चाहा तो अनुमति नहीं दी गई। क्रिश्चियन धर्म में पुनर्जन्म को नहीं माना जाता। पादरी ने यह कहकर इंकार कर दिया कि यह शैतान का काम है और क्राइस्ट के विरुद्ध है। वह वैज्ञानिक ठहर गया क्योंकि धर्म के विरुद्ध नहीं जाना चाहता था परन्तु विज्ञान द्वारा उद्घाटित सत्य ने उसे पुन: उत्साहित किया और वह दूसरे पादरी के पास गया। दूसरे पादरी ने कहा कि इसमें आपका कोई विचार नहीं है, ये तो दूसरों के अनुभव हैं इसलिए आप प्रकाशित करा सकते हो। अनुमोदन मिला, वैज्ञानिक में हिम्मत आ गई, उसने अनुभव प्रकाशित कराये। इसके बाद इस क्षेत्र में शोध करने और प्रकाशित करने का रास्ता खुल गया। – **क्रमश:**

✧✧✧

अंधकार को चीरती............पृष्ठ 11 का शेष

इसके लिए कारगर उपाय है। नब्बे प्रतिशत झगड़े शब्दों के कारण होते हैं, अगर हम कटु और व्यंग भरी वाणी छोड़कर, मीठे और नम्र शब्दों का प्रयोग करें तो झगड़े और फसाद नहीं होंगे। राजयोग के अभ्यास से मुझे यह भी अनुभव हुआ है कि हम कितने दिन जियेंगे, इस बात का महत्त्व नहीं है, महत्त्व इसका है कि हमने जीवन किस प्रकार बिताया। अब जीवन इस तरह से बिताना चाहता हूँ कि मेरे न होने पर लोग मेरी कमी महसूस करें। **किसी से घृणा करना मानसिक बीमारी है। मन में गलत विचारों के आने से ही घृणा उपजती है। दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं, इसके बजाए, दूसरों के प्रति हमारी क्या धारणाएँ हैं, यह सोच ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। गुस्सा भी मन की कमजोरी है। दूसरों को पीड़ा पहुँचाने की चाह रखने वाले को अन्त में पछताना पड़ता है। शान्ति की खोज में हम चाहे सारी दुनिया का चक्कर लगा आएँ, शान्ति नहीं मिलेगी क्योंकि वह तो हमारे भीतर है, भीतर झाँककर ही इसे अनुभव किया जा सकता है।** राजयोग के माध्यम से मिली सभी पूज्यनीय ब्रह्माकुमारी बहनों का किन शब्दों में धन्यवाद करके अपने को कृतज्ञ करूँ जिन्होंने अमृत-तुल्य विचारों से सलाखों में कैद अन्धकार पूर्ण जीवन को आशा की नई रोशनी दी है।

✪✪

पवित्र धन एवं समय की शक्ति

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

समय के बारे में दो प्रकार का गायन हम सुनते आये हैं। उनमें से एक है कि समय बलवान है। कैसे ? इसके उत्तर में यह बात उद्धृत की जा सकती है कि 'वो ही धनुष-बाण काबे अर्जुन लुटियो।' महाभारत आख्यान में गायन आता है कि विराट राजा के नगर के गौधन को जब कौरवों ने ले जाने का प्रयास किया तब अकेले अर्जुन ने उनके सभी महारथियों को हरा कर गौधन यथास्थान पहुँचाया। महाभारत युद्ध में भी कौरवों पर जीत का मुख्य कर्णधार तथा आधारस्तंभ अर्जुन ही था। परन्तु वही अर्जुन जब यादवास्थली के बाद यादव-कुलवधुओं को द्वारका से हस्तिनापुर ले जा रहा था तब रास्ते में काबाओं अर्थात् लुटेरों ने उसको हरा दिया और यादवों का धन लूट लिया।

दूसरी ओर यह भी गायन है कि व्यक्ति महान है। वह काल तथा उसके कारण उत्पन्न की गई परिस्थितियों पर विजय पाता है। यह सनातन प्रश्न है कि काल, नेतृत्व का निर्माण करता है या बलवान नेतृत्व श्रेष्ठ काल का निर्माण करता है ? दोनों बातें शक्तिशाली हैं परन्तु कई बार देखा गया है कि श्रेष्ठ नेतृत्व ही श्रेष्ठ समय का निर्माण कर सकता है। वर्तमान इतिहास, आने वाले नए विश्व की पूर्व भूमिका का इतिहास है जिससे सिद्ध है कि सतयुगी दैवी सृष्टि का निर्माण महाकालेश्वर परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा तथा हम ब्राह्मण बच्चों के द्वारा करते हैं। सतयुगी सृष्टि के श्रेष्ठ धन तथा पवित्र पाँच तत्वों का निर्माण परमात्मा ज्ञान एवं योग की शक्ति द्वारा ही कर रहे हैं। सतयुग आदि में 16 कला सम्पूर्ण देवता थे जिस कारण ही वह समय सर्वश्रेष्ठ समय था। बाद में सम्पूर्ण अवस्था में दो कलाएँ कम हुई तो समय भी बदल गया और त्रेतायुग कहलाया। द्वापर एवं कलियुग भी हमारी अवस्था के आधार पर आते गए। अब हमारे पुरुषार्थ द्वारा चढ़ती कला हो रही है तो समय का गायन भी बदल गया है।

कलियुग में भी चंगेज़ खान, मोहम्मद गज़नवी आदि ने भारत के कई स्थानों को लूटा। मुगल बादशाहों ने भारत में मुगल साम्राज्य स्थापित किया। शिवाजी महाराज ने मराठा साम्राज्य स्थापित किया। कोलंबस ने अमेरीका तथा वास्को-डी-गामा ने भारत का रास्ता ढूँढ़ा और फिर अंग्रेज़ों ने भी यहाँ राज्य स्थापित किया। सफल नेतृत्व द्वारा यह सब हुआ, न कि समय के बल से। साम्यवाद या समाजवाद का निर्माण भी व्यक्तियों द्वारा किया गया। आदि सनातन देवी-देवता धर्म के बाद अनेक धर्मस्थापकों और पैगम्बरों ने भी भिन्न-भिन्न धर्मों की स्थापना की। बाद में उन धर्मों में अनेक मठ, पंथ, मत आदि का निर्माण भी व्यक्तियों ने किया। वैज्ञानिकों ने कई प्रकार के अनुसन्धान किए। समय साक्षी होकर इन सभी गतिविधियों को देखता रहा। भारत की आज़ादी का कार्य भी प्रतिभाशाली नेतृत्व ने सम्पन्न किया। नेताओं ने त्याग तथा अथक पुरुषार्थ द्वारा भारत को स्वतंत्रता दिलाई। ओलिवर क्रोमवेल ने इंग्लैण्ड में सत्ता में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। साम्यवाद की स्थापना रशिया में लेनिन और उनके साथियों ने की। आज शक्तिशाली नेतृत्व नहीं है तब ही भ्रष्टाचार आदि का बोलबाला है। इससे सिद्ध होता है कि समय समर्थ नेतृत्व का निर्माण नहीं करता है परन्तु

उसका आह्वान करता है। समय रचना है, ना कि रचयिता। युद्धों का इतिहास भी इन बातों का गवाह है। नेपोलियन ने यूरोप में युद्ध छेड़ा। हिटलर ने द्वितीय विश्व युद्ध (Second World War) जर्मनी से प्रारम्भ किया और मुसोलिनी ने उसी युद्ध में इटली (Italy) को शामिल किया। सद्दाम हुसैन ने कुवैत पर सैन्य चढ़ाई की। कुछ समय पहले ही अमेरीकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश एवं इंग्लैण्ड के प्रधान टोनी ब्लेयर (Tony Blair) ने इराक पर हमला किया।

अभी हमने दुबई एवं ओमान आदि देशों का सफर ईश्वरीय सेवा अर्थ किया। वहाँ भी देखा कि सफल नेतृत्व ने प्रकृति के सहयोग से बहुत ही अधिक परिवर्तन किया है। एक जमाना था जब वहाँ के लोग गधे पर सामान तथा पीने का पानी आदि ले जाते थे। बिजली भी नहीं थी। राजा-प्रजा गरीब थे। ओमान का पूर्व राजा गद्दीनशीन हुआ तब राजकोष में भारत के 180 रुपये थे। उस समय वहाँ भारत के रुपये का चलन था। वहाँ के साहूकार प्रजाजनों ने शेख आदि को धन की मदद की। परिणामस्वरूप कई भारतियों को वहाँ की नागरिकता (Citizenship) प्राप्त हुई। ओमान के वर्तमान सुलतान का शिक्षा के कारण दृष्टिकोण बदला और अब यह देश अमेरीका, इंग्लैण्ड आदि के समान अर्थव्यवस्था कर रहा है। उन्होंने अब पुरानी धर्म भावनाओं में भी थोड़ा परिवर्तन किया है। प्रवासियों को आकर्षित करने हेतु अच्छे आधुनिक होटलों का भी निर्माण किया है। कलियुग के स्वर्ग की वहाँ रचना की गई है। प्रकृति ने तेल का भी भण्डार दिया है।

दुबई देश के पास तेल का भण्डार इतना नहीं है। अबुधाबी देश के पास अगले 100 वर्ष तक के लिए तेल का भण्डार है परन्तु वहाँ के शेख ने देश को आगे बढ़ाने का इतना पुरुषार्थ नहीं किया है। दुबई के शेख ने धंधा बढ़ाने का पुरुषार्थ किया है। हम जब वहाँ थे तब उन्होंने महीना भर चलने वाले दुबई शॉपिंग फेस्टिवल का उद्घाटन किया। कार्यक्रम बहुत बड़े रूप से आयोजित हुआ था। प्रचार और प्रसार के कारण सारी दुनिया से प्रवासी आए और व्यापार को बढ़ावा मिला। मैंने सन् 1978 में 10 दिन दुबई में ईश्वरीय सेवा अर्थ व्यतीत किए थे। अब 2004 में वहाँ जादुई परिवर्तन हर बात में देखा। एक गाँव जैसा वह देश अब परिश्रम से धनाढ्य देशों के बड़े-बड़े महानगरों जैसा बन गया है। हर कोई प्रथम श्रेणी वाला हो गया है। यह सब हुआ एक राजा के पुरुषार्थ के बल पर। यह मिसाल इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि धन पुरुषार्थ से मिलता है।

प्यारे शिव बाबा कहते हैं कि सतयुग में प्रकृति हमारी दासी होगी। इस बात का थोड़ा एहसास अब हो रहा है। गधों पर पानी ढोने के बजाए आज वहाँ समुद्र के खारे पानी (Salt water) से क्षार निकाल कर शुद्ध जल सबके घरों में पहुँचाया जाता है। गरमी के दिनों में तापमान 50°सें. से 55°सें. तक पहुँचता है। अब तापमान नियन्त्रक यन्त्रों द्वारा घर, कार, दुकानों आदि में अनुकूल वायुमण्डल निर्मित कर गर्मी में भी ठीक रीति से कारोबार चलता है। भारत में कई स्थानों पर बिजली की कटौती होती है परन्तु वहाँ बिजली सदा मिलती रहती है। फूल और सब्जियाँ सारे विश्व के बाजारों से हर रोज आती हैं। आम, बारह मास मिलता है। जब कलियुग में इतना वैभव हो सकता है तो सतयुग में हमारा वैभव श्रेष्ठ, भव्य एवं उत्तम होगा ही क्योंकि वहाँ प्रकृति और आत्मा दोनों सतोप्रधान हैं। अब तो दोनों ही तमोप्रधान हैं। यह लेख इसलिए लिख रहा हूँ कि परमात्मा और हम आत्माएँ ही श्रेष्ठ काल और श्रेष्ठ परिस्थितियों का निर्माण कर सकते हैं, यह सनातन सत्य है। ✦✦

1. धरान- नवनिर्मित सुख-शान्ति भवन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राज बहन, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता केशव मैनाली, श्रीश्री 1008 स्वामी कैलाशानन्द जी तथा अन्य। **2. आनन्दी (पूना)-** आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन के बाद ग्रुप फोटो में हैं नगराध्यक्ष भ्राता बबनराव कुर्हाडे, नगर परिषद प्रशासिका बहन गाडेकर, ब्र.कु. पदमा बहन तथा अन्य । **3. बुटवल-** ज्ञान-चर्चा के बाद मुख्य ज़िलाधिकारी भ्राता ध्रुव प्रसाद शर्मा, ब्र.कु. कमला बहन, भ्राता रण शार्दुल गणके, भ्राता अमीर बस्नेत तथा अन्य । **4. दमौली-** विश्व-शान्ति प्रार्थना यज्ञ का उद्घाटन करते हुए सहायक प्रमुख ज़िलाधिकारी भ्राता अर्जुन सुबेदी, ब्र.कु. रश्मि बहन, रेडक्रास के सभापति भ्राता परशुराम गिरी, ब्र.कु. शोभा बहन तथा अन्य । **5. कुश्मा-** पत्रकार सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए फोटो पत्रकार महासंघ के अध्यक्ष भ्राता भवानी प्रसाद शर्मा, ब्र.कु. सुधा बहन, भ्राता रामचन्द्र श्रेष्ठ तथा अन्य । **6. कृष्णनगर-** आध्यात्मिक प्रवचन के पश्चात् ग्राम पंचायत के अध्यक्ष, ब्र.कु. कमला बहन, मन्दिर व्यवस्थापक भ्राता ज्ञानदास, सन्त लालचन्द जी तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **7. ब्रह्मपुर (बड़ा बाज़ार)-** मूल्यनिष्ठ जीवन कार्यक्रम में विचार व्यक्त करती हुई महापौर बहन सुलोचना स्वाईं । उप-महापौर भ्राता निरंजन जेना, ब्र.कु. बासन्ती बहन तथा ब्र.कु. संयुक्ता बहन भी साथ में विराजमान हैं । **8. बानपुर-** सम्पूर्ण स्वास्थ्य और तनाव मुक्ति कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए क्लब के अध्यक्ष डॉ. भ्राता के.के. सामल, ब्र.कु. डॉ. जी. मिश्रा, भ्राता नीलमणि पंडा तथा ब्र.कु. उमा बहन ।

1. पूना (मीरा सोसायटी)- सांस्कृतिक पुरस्कार विजेता, सितारवादक उस्ताद उस्मानखान जी के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. विद्या गोखले तथा ब्र.कु. अधीश गोखले। **2. मुम्बई (कोलाबा)**- शेरिफ भ्राता जगन्नाथ हेगडे के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. अमी बहन तथा ब्र.कु. गायत्री बहन । **3. पूना (तासगांव)**- अन्तर्राष्ट्रीय श्रीकृष्ण भावनामृत संघ के अमरीका से पधारे श्रीश्री राधाकुण्ड प्रभु महाराज व श्री लोकनाथ महाराज को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. पुष्पा बहन । **4. तानसेन**- आध्यात्मिक स्नेह-मिलन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ज़िला न्यायाधीश भ्राता लेखनाथ रेगमी, ब्र.कु. कमला बहन तथा अन्य । **5. पाथरी**- अब्दुल्ला खाँ दुर्राणी तथा नगराध्यक्ष जी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. शान्ता बहन । **6. सफाला (वसई रोड)**- भ्राता सुधीर दांडेकर जी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु.प्रफुल्ला बहन । **7. सूनाबेड़ा**- एच.ए.एल. कोरापुट प्रभाग के मुख्य प्रबन्धक भ्राता डी.एन. व्यास को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुईं ब्र.कु. तारा बहन । **8. कारंजा (लाड)**- ज़िला परिषद अध्यक्ष भ्राता दिलीप जाधव का स्वागत करती हुईं ब्र.कु. मालिनी बहन । **9. जाजपुर रोड**- एन.ए.सी. की अध्यक्षा बहन सरोजिनी बाला को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. स्नेहा बहन । **10. बसवन बागेवाडि**- रेल राज्य सचिव भ्राता बसनगौड पाटिल को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. नागरत्ना बहन । **11. मण्ड्या (कर्नाटक)**- विश्व शान्ति के लिए राजयोग कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एम.एल.सी. भ्राता एच.होनाप्पा, ब्र.कु. शारदा बहन तथा एडवोकेट बहन पुष्पावती जी । **12. पारादीप**- पारादीप फास्फेट लि. के अध्यक्ष भ्राता स्टार्लिन तथा ब्र.कु. मानसी बहन आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ।

1. पूना- नगरपालिका के अतिरिक्त आयुक्त भ्राता एस.बी. पाटिल तथा उपायुक्त भ्राता गोसावी जी, ब्र.कु. सरिता बहन तथा अन्य नेतृत्व कला विषय पर प्रवचन के बाद ब्र.कु. डॉ. प्रेम मसंद भाई के साथ । **2. मुम्बई (मालाड)-** स्मृति विकास कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं प्राचार्य भ्राता गाला जी, ब्र.कु. कुन्ती बहन, ब्र.कु. स्वामीनाथन भाई, ब्र.कु. शोभा बहन विचार व्यक्त करते हुए । **3. नांदेड (कैलाश नगर)-** तनाव मुक्ति कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ. प्रेम मसंद, वरिष्ठ पत्रकार भ्राता सुधाकर राव जी डाइफोडे, डॉ. भ्राता मोहिते जी, डॉ. भ्राता करवाजी, ब्र.कु. शिवकन्या बहन तथा अन्य । **4. सोनई (राहुरी)-** आध्यात्मिक कार्यक्रम के उपलक्ष्य में शिवध्वज फहराते हुए सेवासंघ के अध्यक्ष भ्राता विश्वास राव गडाख, पी.एस.आई. भ्राता जाधव जी, ब्र.कु. नलिनी बहन तथा अन्य । **5. अम्बाजोगाई-** स्व-व्यवस्थापन शिविर का उद्‌घाटन करते हुए प्रतिष्ठित व्यापारी भ्राता रामचन्द्र झंवर, ब्र.कु. महानन्दा बहन, ब्र.कु. कविता बहन तथा अन्य । **6. मालेगाँव (वाशिम)-** ज्ञान-चर्चा के बाद आमदार भ्राता विजयराज जाधव, ठेकेदार भ्राता विजय कनल, व्यापारी भ्राता रामबाबू मुंदडा, ब्र.कु. स्नेहलता बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में । **7. बार्शी-** समाजसेवी भाइयों के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. संगीता बहन तथा ब्र.कु. मीरा बहन ग्रुप फोटो में । **8. पूना (रहाटणी)-** व्यसन मुक्ति शिविर में मंच पर उपस्थित हैं नवनगर प्राधिकरण अध्यक्ष भ्राता बाबा साहेब तापकीर, ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा अन्य ।

1. कोलकाता- एक शाम – ईश्वरीय वरदानों के नाम कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं (बाएं से) राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, प. बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता वीरेन जे. शाह जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, केन्द्रीय लघु उद्योग राज्यमंत्री भ्राता तपन सिकदर तथा ब्र.कु. भ्राता निर्वैर जी । **2. रायपुर-** नवनिर्वाचित छत्तीसगढ़ विधानसभा के सत्रारम्भ अवसर पर सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह । मंच पर उपस्थित हैं – विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष भ्राता राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, नवनिर्वाचित अध्यक्ष भ्राता प्रेम प्रकाश पाण्डे, प्रतिपक्ष के नेता भ्राता महेन्द्र कर्मा तथा ब्र.कु. कमला बहन । सभा में सभी मंत्रीगण । **3. आगरा-** आध्यात्मिक कलादीर्घा का उद्घाटन करते हुए (दाएं से) ब्र.कु. जयन्ती बहन, ब्र.कु. विमला बहन, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, राजयोगिनी दादी जानकी जी, उ.प्र. के राज्यपाल महामहिम भ्राता विष्णुकान्त शास्त्री जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई जी तथा अन्य । **4. मुम्बई (सायन)-** महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री भ्राता सुशील कुमार शिन्दे को ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. वन्दना बहन । **5. मुम्बई (घोडपदेव)-** पद्मविभूषण पण्डित भ्राता जसराज जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मालती बहन । **6. अहमदाबाद (सुख-शान्ति भवन)-** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय तथा ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर आबू पर्वत द्वारा लाकड़िया गांव में नवनिर्मित सामूदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का उद्घाटन करते हुए गुजरात के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता आई.के. जाडेजा, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. निर्वैर भाई, सांसद भ्राता बाबू भाई तथा अन्य ।